*Journal of Social Issues and Development (JSID)*
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3, Issue 1, January-April, 2025. pp. 214-250)

# 'पढ़ना', समझकर पढ़ना हैः जरूरी है 'समझकर पढ़ना' सीखना

**केवलानन्द काण्डपाल**

## सारांश

हम लोकतान्त्रिक समाज का हिस्सा हैं। एक लोकतान्त्रिक समाज में शिक्षा की ऐसी व्यवस्था होनी बहुत जरुरी है, जिसमें सभी के लिए बराबरी के मौके उपलब्ध हों, समता, समानता एवं न्याय पर आधारित समाज की स्थापना के लिए यह एक बहुत ही उपयोगी निवेश है। भारतीय लोकतंत्र के बहुभाषी परिप्रेक्ष्य में भाषा, संस्कृति एवं समाज में समावेशी वातावरण सृजित करने के लिए भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में समावेशी वातावरण सृजित करना जरुरी है। यदि हम ऐसा कर पाने में सफल रहते हैं तो इससे शिक्षा में समावेशी वातावरण का सृजन करने में बहुत हद तक मदद मिल सकती है क्योंकि शिक्षा के हरेक स्तर पर भाषा का स्थान केन्द्रीय है। हमारे देश के सन्दर्भ में इस बात के साक्ष्य बहुलता में हैं कि बच्चे अपने परिवेश की भाषा में बात–चीत करने में सक्षम हैं और इस भाषा में अपनी समझ एवं अवधारणाओं को अभिव्यक्त करने में सहजता महसूस करते हैं। विद्यालयों में भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में हमारी आम समझ यह है कि बच्चे विद्यालय में 'पढ़ना–लिखना' सीखते हैं, आम व्यवहार की भाषा तो बच्चे विद्यालय में प्रवेश करने से पहले ही सीख चुके होते हैं परन्तु विद्यालय में लिखी हुई भाषा को पढने और पढने के बाद अपने विचारों और भावनाओं को लिखकर व्यक्त करने में समर्थ होते हैं। इसमें कहीं न कहीं पढ़ने में समझ का भाव अन्तर्निहित है, और अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो पढ़ना दरअसल समझकर पढना है और लिखना अपनी समझ को लिखकर अभिव्यक्त करना है। पढने–लिखने के इस बुनियादी कौशल को

प्रधानाचार्य, राजकीय इंटरमीडियट कालेज मंडलसेरा, जनपद–वागेश्वर, उत्तराखंड– 263642.

आम लोग बिना किसी विवाद के बच्चे की भाषा की बुनियादी काबलियत मानते हैं। वर्ष दर वर्ष सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा स्कूली वर्ष दर वर्ष स्कूली बच्चों के अधिगम स्तर स्तर का आंकलन करने वाले सर्वेक्षण बताते हैं कि बच्चे अपनी कक्षा के स्तर से निम्न स्तर की कक्षा की विषय वस्तु को पढने में सफल नहीं हो पा रहे हैं और इसी प्रकार से किसी पाठ्य वस्तु को पढ़कर अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर पाने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसके साथ ही यह भी देखने में आता है कि अपनी भाषा की पाठ्य पुस्तक को पढ़कर सुना देते हैं और पाठ्य पुस्तक के प्रश्नों के उत्तर भी बता देते हैं, लिख देते हैं भले ही यह सभी पाठ्य पुस्तक के किसी अंश के रूप में होता है। इस प्रकार के अनुभव मुझे अपने विद्यालय के बच्चों के सम्बन्ध में एक से अधिक बार मिले हैं। इस सम्बन्ध में किये गए शोधों के अध्ययन के पश्चात यह अंतर्दृष्टि विकसित हुई कि पढने और समझकर पढने में अंतर है, लिखने और समझकर लिखने में अंतर है। यदि यह अंतर बना हुआ है तो बच्चा पढ़ नहीं रहा है वरन रट रहा है, लिखने में रटी हुई विषय वस्तु को ही लिख रहा है। अतः भाषा में पाठ्य वस्तु पढने से पहले जरूरी है 'पढना' सीखना और इसी प्रकार से किसी विषय वस्तु को अपनी समझ के आलोक में लिखना सीखना। अंग्रेजी भाषा में समझ के साथ पढने की रणनीतियों को लेकर बहुत अच्छी संख्या में पुस्तकें और शोध सामग्री उपलब्द्ध है परन्तु भारतीय भाषाओँ में इसकी कमी महसूस की जाती रही है। पढ़ने के कौशल को विकसित करने के मकसद से पठन कार्यशालाओं के आयोजन और बच्चों के पठन व्यवहार के अवलोकन से इस बात का इशारा मिलता है कि बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए पठन कार्यशालाएं बहुत हद तक उपयोगी साबित हो सकती हैं। इस प्रकार की कार्यशालाएं बच्चों को पढने की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार कर सकती हैं। वस्तुतः इस प्रकार की पठन कार्यशालाएं, कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं का नियमित हिस्सा बननी चाहिए, विशेषकर भाषा की कक्षाओं के लिए ये कार्यशालाएं बहुत उपयोगी साबित हो सकती हैं। दरअसल स्कूली स्तर पर भाषा शिक्षा अहम स्थान रखती है, एक तरह से भाषा पूरी पाठ्यचर्या में विद्यमान होती है। यदि बच्चे पढना सीख जाएँ, पढ़कर अपने लिए अर्थ निर्माण में सक्षम हो जाएँ अर्थात समझकर पढ़ना सीख सकें तो इसका लाभ न केवल भाषा की कक्षाओं में मिलेगा वरन अन्य विषयों की पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने में इससे मदद मिल सकेगी। बच्चों द्वारा 'समझकर पढ़ने' की प्रक्रियाओं के अवलोकन और इसके अनुभवों को साझा करने के उद्देश्य से यह शोध परचा लिखा गया है।

**मुख्य शब्दः** पठन–कार्यशालाएं, पठन–व्यवहार, पठन–जिम्मेदारी, समझ के साथ पढ़ना।

**अध्ययन अवधिः** जनवरी 2020 से मार्च 2020 तक लगभग 3 माह।

## प्रस्तावना

'पढ़ना ज्ञान की दुनियां में प्रवेश करना और उसके साथ चलना है।'[1] स्कूली बच्चों के अध्यापकों को अपनी कक्षाओं में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनमें 'पढ़ना सिखाना' संभवतः सबसे कठिन और स्फूर्तिवान चुनौती है। 'हमारे देश में लाखों बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन इनमें से बहुतेरे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। बहुत से स्कूल की परीक्षा पास कर लेते हैं, लेकिन पढ़ने में रुचि का विकास नहीं कर पाते। कई बच्चे आराम से पढ़ते दिखते हैं पर वास्तव में पढ़े हुए को ज्यादा समझ नहीं पाते।'[2] पढ़ना सिखाना (समझकर पढ़ना सिखाना) सबसे कठिन चुनौती इसलिए भी है कि प्रथमतः पढ़ना एक साधारण कौशल नहीं है, इसमें अन्य कौशल और बोध क्षमताएं भी शामिल हैं और दूसरा–पढ़ना सिखाने की कोई एक अचूक विधि का दावा नहीं किया जा सकता है। बच्चों को पढ़ने का कौशल सिखाना और उसमें भी समझकर पढने का कौशल सिखाना एक स्फूर्तिवान काम इसलिए भी है कि बच्चे के सीखने का आगामी जीवन बहुत कुछ इसी बात पर निर्भर करेगा। 'यदि एक बार आप बच्चे को पढने और पुस्तकों से सफलतापूर्वक जोड़ सके तो फिर उसके लिए संभावित उपलब्धियों का कोई अंत नहीं है।'[3] बच्चे पढ़ना किस तरह से सीखते हैं? बच्चों को पढना सिखाने के बेहतर तरीके क्या–क्या हो सकते हैं? बच्चे पढ़कर कितना समझ पा रहे हैं? पढ़ना सिखाने के इन सभी पहलुओं पर दुनिया भर के शिक्षाविद और शिक्षक लगातार शोध कर रहे हैं। इन शोधों के साथ–साथ पढने को लेकर हमारी समझ बढ़ रही है। इसके साथ यह भी सत्य है कि पढ़ना सिखाने का एकमात्र कारगर तरीके का दावा नहीं किया जा रहा है और वस्तुतः ऐसा दावा करना तर्क संगत भी नहीं होगा। इस बारे में हालिया शोधों से उन तरीकों के बारे में जानकारी मिल रही है, जिनसे समझते हुए पढ़ने की मौजूदा स्थितियों को बेहतर किया जा सकता है। समझते हुए पढने की चुनौती केवल भारत के बच्चों के समक्ष ही नहीं है वरन पूरी दुनियां के बच्चों के समक्ष इस प्रकार की चुनौतियाँ सामने आ रहीं हैं। एक और बेहद गौर करने वाली बात यह है कि बच्चों में स्थानीय भाषा में भी समझ के साथ पढ़ने की स्थितियां भी सुधार की मांग कर रहीं हैं। इतना ही नहीं स्थानीय भाषा से इतर माध्यम से पढाई करने वाले बच्चों को भी अपनी पढाई के अलग–अलग दौर में समस्याओं से दो–चार होना पढता है। अंग्रेजी भाषा में समझ के साथ पढने की रणनीतियों को लेकर बहुत सी पुस्तकें और शोध सामग्री उपलब्ध है परन्तु भारतीय भाषाओँ में इस तरह की सामग्री की उपलब्धता बहुत कम या यूँ कहें कि नहीं के बराबर है।

अब प्रश्न यह सामने आता है कि बच्चों के लिए समझ के साथ पढना सीखना क्यों महत्वपूर्ण है? समझ के साथ पढ़ने की जरुरत और बच्चों के लिए समझ के साथ पढने वाले पाठक बनने के लिए 'समझ के साथ पढना सीखना' निम्नांकित कारणों से महत्वपूर्ण है–

- बच्चों द्वारा पठन कुशलता हासिल करने के लिए यह बहुत जरूरी है। यदि बच्चे

पठन कुशलता हासिल कर सकें तो उनके लगातार पढना जारी रखना संभव हो पाता है और आने वाले वर्षों में यह पठन कुशलता बच्चों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है।

- पढना एक ऐसा काम है जिसे बच्चे स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं। यदि बच्चे समझ के साथ पढ़ना सीख जाएँ तो इससे बच्चों को स्वयं, अन्य लोगों और दुनियां के बारे में एक समझ बनाने में मदद मिल सकती है।
- समझ के साथ पढने का कौशल विकसित हो जाने पर पढने के लिए बच्चों की दूसरों पर निर्भरता कम होती जाती है और बच्चा स्वतंत्र पाठक बनने की दिशा में आगे बढ़ता है। इसमें बच्चे का कौशल, मेहनत एवं प्रतिबद्धता तीनों ही शामिल होती जाती हैं। वस्तुतः बेहतर पाठक बनने के लिए बच्चों द्वारा अपने लिए पठन लक्ष्य निर्धारित करना और उसे हासिल करना जरुरी है। हमें बच्चों को यह अहसास कराने की जरुरत है कि पढ़ना आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है और स्वतंत्र पाठक अपनी पठन रुचि को स्पष्ट पहचानते हैं, निरंतर पढ़ते, सोचते और लिखते रहते हैं, इसके साथ–साथ नयी बातों को जानने, समझने और सीखने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं।
- बच्चों को इस बात के लिए भी सजग और रजामंद करने की जरुरत है कि समझ के साथ पढ़ना उनको एक ऐसे नागरिक के रूप में विकसित होने में मदद करता है, जो किसी समस्या का हल ढूंढने के क्रम में पुस्तकीय ज्ञान के बाहर पठन सामग्री का उपयोग करते हैं और समस्या समाधान के लिए अपनी ओर से भी योगदान करने का प्रयास कर सकते हैं।

हम सभी पुस्तकें पढ़ते हैं, साहित्य का अनुशीलन करते हैं और हम यह भी जानते हैं कि हम सभी के पढ़ने का तरीका अलग–अलग होता है। हम किस तरह से पढ़ना शुरू करते हैं? पढने के बीच में कब रुक जाते हैं? पढने के बीच बहुत बार कुछ करते हैं, जैसे किताब के किसी खास हिस्से को पेन या पेंसिल से अंडरलाइन कर लेते हैं, टेक्स्ट के बगल में अपनी समझ के बिन्दुओं को लिख लेते है, कोई खास पन्ना मोड़ देते है जिससे भविष्य में जरुरत पढने पर उसको पुनः देखा जा सके, नोट्स लेते हैं, आदि–आदि। किताब को पूरा पढने के बाद क्या करते हैं? जिससे कि उस किताब विशेष को ज्यादा सक्षम तरीके से समझ सकें। इस समझ को अपने मित्रों, लोगों और अकादमिक मंचों पर किस तरह से साझा करते हैं? ये सभी समझ कर पढने के उपक्रम के अभिन्न हिस्से हैं। वस्तुतः पढना एक कला है, स्वैच्छिक और स्वतंत्र गतिविधि है, परन्तु पठन समझ को बढ़ाने के लिए शिक्षाविदों द्वारा कुछ व्यवस्थित शोध किये गए हैं, फ्रेमवर्क और मॉडल प्रस्तुत किये गए हैं और इसको वैज्ञानिक आधार पर समझने की कोशिश की गयी है। इस शोध अध्ययन में डेब्बी मिलर[4] द्वारा प्रस्तुत फ्रेमवर्क को भारतीय

सन्दर्भ में संदर्भीकृत (Contextualize) करके काम चलाऊ फ्रेमवर्क का उपयोग किया गया है। इसके साथ–साथ पीयरस और ग्लान्धर[5] द्वारा प्रस्तुत 'ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिलिटी मॉडल का उपयोग किया गया है। उक्त फ्रेमवर्क और मॉडल का उपयोग बच्चों की पठन कार्यशालाओं के आयोजन में इस्तेमाल किया गया है। पठन कार्यशालाओं के अवलोकन, चर्चा और अनुभवों को इस पर्चे के माध्यम से प्रस्तुत करने का यह एक छोटा सा गिलहरी प्रयास है।

## छात्र प्रोफाइल

प्रस्तुत अध्ययन राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 6, 7 एवं कक्षा 8 में अध्ययनरत बच्चों के सन्दर्भ में किया गया है। राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पुड्कुनी में कक्षा 6 से कक्षा 8 तक कुल 38 बच्चे नामांकित हैं, इसमें से 22 बालिकाएं तथा 16 बालक हैं, 13 बालक एवं 19 बालिकाएं सामान्य वर्ग से हैं, 3 बालक एवं 3 बालिकाएं अनुसूचित जाति से हैं, 6 बालक एवं 6 बालिकाएं प्रथम पीढ़ी की विद्यार्थी हैं, इससे पहले इनके परिवार से किसी को भी स्कूल जाने के अवसर नहीं मिले हैं। अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग से कोई भी विद्यार्थी नामांकित नहीं है। इस अध्ययन में सम्मिलित बच्चों का प्रोफाइल निम्नांकित तालिका 01 में दिया गया है–

**तालिका–01**

**अध्ययन में सम्मिलित बालक एवं बालिकाओं का सामाजिक प्रोफाइल**

| विद्यालय | कक्षा | कुल | | अनुसूचित जाति | | सामान्य | | प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | बालक | बालिका | बालक | बालिका | बालक | बालिका | बालक | बालिका |
| रा0उ0मा0वि0पुड्कुनी | 6 | 3 | 8 | 1 | 1 | 2 | 7 | 1 | 3 |
| | 7 | 5 | 4 | 0 | 0 | 5 | 4 | 2 | 1 |
| | 8 | 8 | 10 | 2 | 2 | 6 | 8 | 3 | 2 |
| योग | | 16 | 22 | 03 | 03 | 13 | 19 | 06 | 06 |

श्रोतः रा0उ0मा0वि0पुड्कुनी एवं रा0प्रा0वि0पुड्कुनी, कार्यालय अभिलेख, 2019–20

## कोडिंग

इस अध्ययन के क्रम में, शोध नैतिकता एवं गोपनीयता को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों की पहचान छुपाने के लिए कोडिंग की गयी है, जैसे कक्षा 6 के पहले क्रम के बालक को कोड 6B1 दिया गया है दूसरे क्रम पर अंकित बालिका को कोड 6G1 दिया गया है, इसी क्रम से यह आगे किया गया है, इसी प्रकार से कक्षा 7 की पहली बालिका को कोड 7G1 तथा पहले बालक को कोड 7B1 दिया गया है। यही प्रक्रिया अपनाते हुए कक्षा 8 की बालिका को कोड

8G1, बालक को कोड 8B1 दिया गया है, इसी क्रम से आगे कोड दिए गए हैं। इस पर्चे में आगे जब भी जरुरत है, इसी कोड का उल्लेख किया गया है। (इसे संलग्नक 01 में दिया गया है)

## साहित्य अवलोकन

इस समस्या के सम्बन्ध में शोध अध्ययनों एवं साहित्य का अध्ययन किया गया। मुख्य रूप से बच्चे की भाषा एवं अध्यापक (प्रोफेसर कृष्ण कुमार, 1996), भारतीय भाषाओं का शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2009) के गहन अध्ययन ने शोधकर्त्ता को इस शोध अध्ययन के लिए प्रेरित किया। इसके साथ–साथ बच्चों के पढने/पठन कौशल से सम्बंधित शोध अध्ययनों जैसे एंडरसन एवं पिएरसन (1984), हानसेन (1981), प्रेस्सले (1976), व राफेल (1984), पलिंस्कार एवं ब्राउन (1984) तथा ब्राउन डे एवं जोंस (1983) आदि का गहन अध्ययन करने के पश्चात बच्चों के पठन कौशल के विकास हेतु हस्तक्षेप करने का निश्चय किया गया। पठन कार्यशालाध्कक्षा हेतु डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए फ्रेमवर्क (रीडिंग वर्कशॉप) को संदर्भीकृत (Contextualize) करके प्रयुक्त किया गया। यह फ्रेमवर्क पियर्सन पियर्सन एवं ग्लान्धर द्वारा वर्ष 1983 में प्रस्तुत ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिल्टी मॉडल पर आधारित है।

## शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन निम्नांकित शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने के क्रम में आयोजित किया गया है–

1. समझकर पढना वस्तुतः क्या है? यह किस प्रकार से होता है?/हो सकता है? समझकर पढने में क्या–क्या घटित होता है?रुहोना चाहिए?
2. क्या रीडिंग वर्कशॉप बच्चों में समझ के साथ पढ़ने की कुशलता को बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं? क्या पठन कार्यशालाओं में ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिल्टी मॉडल का उपयोग से बच्चों को पढ़ने की जिम्मेदारी लेने में मदद करता है?
3. समझकर पढने का आकलन किस प्रकार किया जा सकता है? कब हम कह सकते हैं कि बच्चे को समझकर पढना आ गया है?
4. समझकर पढने के कौशल के विकास के पश्चात इसका भाषा के अध्ययन में किस प्रकार से लाभ मिलता है? मिल सकता है?

## अध्ययन के उद्देश्य

यह अध्ययन जनपद बागेश्वर के दुर्गम क्षेत्र में अवस्थित विद्यालय रा0उ0मा0वि0 पुड़कुनी में कक्षा 6, 7 एवं 8 में अध्ययनरत 38 बच्चों के सन्दर्भ में किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य

उद्देश्य यह पता लगाना है कि क्या पठन कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों में पठन कौशल विकसित किया जा सकता है? बच्चों के स्वतंत्र एवं सतत पाठक बनने के लिए कौन सी रणनीति कारगर हो सकती है? 'समझ कर पढना' दरअसल क्या है और यह किस प्रकार से हो सकता है? समझकर पढने का आंकलन किस प्रकार से किया जा सकता है? यदि बच्चे ने समझकर पढ़ने का हुनर हासिल कर लिया है तो इसका भाषा अध्ययन और अन्य विषयों में किस प्रकार से लाभ मिल सकता है? वस्तुतः इन सभी उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन किया गया है। बच्चों के भाषा (हिंदी) सम्बन्धी महत्वपूर्ण पढ़ने के कौशल के बारे में यह जानने–समझने की कोशिश इस अध्ययन में की गयी है कि पढ़ना बच्चों के लिए एक बोझिल काम क्यों हो जाता है? यदि पढने के साथ–साथ बच्चे अपनी समझ बनाने में असमर्थ रहते हैं तो इसका असर बच्चों के पठन व्यवहार पर किस तरह से पड़ता है? इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कुछ ठोस समाधानध उपाय सुझाना भी इस अध्ययन का उद्देश्य है।

## अध्ययन की आवश्यकता

प्रथमतः यह अध्ययन अध्ययनकर्ता की अकादमिक जिज्ञासा को संबोधित करने के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त बच्चों का भाषा विषय में बेहतर प्रदर्शन न कर पाना, भाषा सम्बन्धी प्रमुख कौशलों यथा–पढ़ना, पढ़े हुए को अपने शब्दों में अभिव्यक्त न कर पाना, विद्यालय, शिक्षक, विद्यालय निरीक्षकों एवं अभिभावकों की चिंता एवं चर्चा का विषय बना रहता है। समय–समय विद्यालयों का निरीक्षण करने वाले अधिकारी/निरीक्षक या अन्य एजेंसी इस बात को लेकर आलोचना करते रहते हैं कि बच्चे अपनी बात को सही तरीके और सही परिप्रेक्ष्य में रखने में असमर्थ हैं। इनमें बहुत बार वे बच्चे भी शामिल होते हैं जिनको कक्षा का 'होशियार' और 'बुद्धिमान' (वस्तुतः यह वर्गीकरण ही गलत है) समझा जाता है। इसका कारण सामान्यतः यह मान लिया जाता है बच्चा घबराहट के कारण या फिर आत्मविश्वास की कमी के कारण ऐसा नहीं कर पाया है। यह भी एक कारण हो सकता है परन्तु जब बच्चे को पढ़ने के क्रम में अपनी समझ बनाने का अवसर ही न मिला हो, उसे समझकर पढ़ने का अभ्यास ही न हो तो बच्चे के पास एकमात्र उपाय यही बचा रह जाता है कि वह पाठ/पाठ्य वस्तु को अच्छे से याद कर ले/रट ले। बच्चा, याद की हुई/रटी हुई विषयवस्तु को पाठ/पाठ्यवस्तु के प्रश्नों के सन्दर्भ में तो उपयोग कर लेता है परन्तु पाठ को समझकर पढने का अभ्यास न होने के कारण बच्चा पाठ/विषयवस्तु के बारे में अपनी समझ बनाने में असमर्थ रहा है तो जैसे ही बच्चे से पूछे जाने वाले प्रश्नों का सन्दर्भ पाठ्यपुस्तक के पाठ से बदल जाता है तो बच्चे उत्तर देने में असफल हो जाते हैं। इसलिए यह जरुरी है कि बच्चों को इस बात को भी सीखने की जरुरत है, दरअसल पढना कैसे सीखा जा सकता है, पढ़ते हुए पाठ्य विषय पर अपनी समझ को विकसित करना क्यूँ जरुरी है? यह जांच–पड़ताल करना उपयोगी हो सकता है कि 'समझकर पढने के लिए कौन सी रणनीति कारगर हो सकती है', इस दृष्टि से भी एक

व्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता महसूस होती है जिसके आधार पर समझकर पढ़ने के कौशलों के बारे में अनुमान मिल सकें और मोटा–माटी निष्कर्ष निकाले जा सकें। यह अध्ययन इसलिए भी जरुरी प्रतीत होता है कि कक्षा में बच्चों द्वारा 'पठन का उपक्रम' और 'समझ के साथ पठन में' दौरान बच्चों के पठन व्यवहार में अंतर को चिन्हित करना, जिससे पढ़ने में कठिनाई महसूस करने वाले बच्चों की मदद के तरीकों लागू किया जा सके। विद्यालय में अप्रैल 2019 से रु पढना पढ़कर ही आएगा अभियान चलाया जा रहा है, इसके अंतर्गत बच्चों की पठन चुनौतियों को जानने–समझने और इसका समाधान करने की कोशिश की जा रही है। यद्धपि यह पहल शोधकर्त्ता द्वारा शुरू की गयी थी परन्तु अब विद्यालय के सभी शिक्षक इस अभियान में शामिल हैं। इस आधारभूमि में 'पढना सीखने' और 'समझकर पढ़ने' की प्रक्रियाओं जानने–समझने के लिए यह अध्ययन मेरे लिए एक उपयुक्त अवसर भी है।

## शोध प्राविधि एवं शोध उपकरण

यह अध्ययन गुणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक अध्ययन तीनों ही के मिश्रित स्वरुप का है। इस शोध क्रम में शोधकर्ता द्वारा 'पठन कार्यशाला' इंटरवेंशन लागू किया गया है, अतः इस अध्ययन में क्रियात्मक शोध के तत्व भी समाहित हैं। इस अध्ययन में डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए फ्रेमवर्क (रीडिंग वर्कशॉप)[6] को संदर्भीकृत (Contextualise) करके प्रयुक्त किया गया है। यह पियर्सन एवं ग्लान्घर द्वारा वर्ष 1983 में प्रस्तुत ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिल्टी मॉडल पर आधारित है। अध्ययन में सम्मिलित विद्यालय की कक्षा 6, 7 एवं 8 में नामांकित बच्चों के साथ बातचीत (बातचीत के प्रमुख बिन्दुओं को संलग्नक 02 में दिया गया है) और अवलोकन सूची (संलग्नक 03) के द्वारा गुणात्मक समंक प्राप्त किये गए हैं। इन गुणात्मक समंकों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया गया है।

## प्रतिदर्श

इस अध्ययन में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पुडकुनी में कक्षा 6 से कक्षा 8 तक अध्ययनरत सभी 38 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है, इनमें से 22 बालिकाएं तथा 16 बालक हैं। (इनका विवरण संलग्नक 05 में दिया गया है)।

## शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के लिए में डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए फ्रेमवर्क (रीडिंग वर्कशॉप) को संदर्भीकृत (Contextualize) करके प्रयुक्त किया गया गया (इसका मूलभूत फ्रेमवर्क संलग्नक संख्या 04 में दिया गया है)। इसके अतिरिक्त पठन कक्षाओं के अवलोकन के लिए स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया है (अवलोकन के बिन्दुओं संलग्नक 03 में दिए गया हैं), अध्ययन में सम्मिलित कक्षा 6 से कक्षा 8 तक नामांकित 22 बालिकाओं तथा 16

बालकों से से अर्द्ध संरचित खुली बातचीत प्रश्नावली के आधार पर बातचीत की गयी (इसका विवरण संलग्नक 02 में दिए गया हैं)।

## सांख्यकीय प्रविधियां

अवलोकन अनुसूची एवं अध्ययन में सम्मिलित कक्षा 6 से कक्षा 8 तक नामांकित 22 बालिकाओं तथा 16 बालकों से से अर्द्ध संरचित खुली बातचीत प्रश्नावली से प्राप्त गुणात्मक समंकों के विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया गया है। इसके लिए किसी विशेष सांख्यकी उपकरण का उपयोग नहीं किया गया है।

## डिजाईन

यह अध्ययन विवरणात्मक, विश्लेष्णात्मक, गुणात्मक अध्ययन एवं क्रियात्मक अनुसन्धान पद्धतियों का सम्मिश्रित स्वरुप का है।

## डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए फ्रेमवर्क (रीडिंग वर्कशॉप) को संदर्भीकृत (Contextualise) करना

डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए रीडिंग वर्कशॉप के फ्रेमवर्क को विद्यालय एवं शोध अध्ययन की जरूरतों के हिसाब से संदर्भीकृत किया गया। मूल रूप से यह फ्रेमवर्क अमेरिका में प्राथमिक कक्षाओं में अंग्रेजी विषय में पठन कौशल एवं क्षमता विकसित करने की दृष्टि से प्राथमिक कक्षाओं के अंग्रेजी विषय के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग में लाया गया था। इस वर्कशॉप में 1–1 घंटे के तीन सत्र आयोजित किये गए थे। इस फ्रेमवर्क को बच्चों की पठन कार्यशाला के अनुरूप निम्नवत संदर्भीकृत किया गया–

- लघु पाठ (20–25 मिनट) पठन रणनीति पर चर्चा।
- समूहध्पीयर समूह में पठन अभ्यास, प्रतिक्रिया, विचार विमर्श (40–45 मिनट)
- पठित विषयवस्तु की समझ को साझा करने के लिए समूह/व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण (25–30 मिनट)
- समूहध्व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण पर फैसिलिटेटर का फीडबैक (15–20 मिनट)
- प्रति सप्ताह एक दिन दो घंटे की पठन कार्यशाला।

इस प्रकार बच्चों की 10 पठन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालों में तीन पठन कार्यशालाओं में फैसिलिटेटर (स्वयं शोधकर्त्ता) द्वारा मॉडलिंग की गयी। इस मॉडलिंग का उद्देश्य बच्चों को इस बात के लिए तैयार करना था कि आगामी कार्यशालाओं में, बच्चे पठन हेतु रणनीतियां, पठन अभ्यास, प्रतिक्रिया एवं विचार–विमर्श किस तरह से करेंगे, अपनी प्रस्तुतियां किस प्रकार से देंगे।

## ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिलिटी मॉडल

यह मॉडल पियर्सन एवं ग्लान्घर द्वारा वर्ष 1983 में प्रस्तावित किया गया था। इसमें पठन जिम्मेदारी को क्रमशः शिक्षक से पाठक छात्र/छात्रा को हस्तांतरित किया जाता है। पियर्सन एवं ग्लान्घर ने वर्ष 1983 में पठन निर्देश हेतु एक मॉडल प्रस्तावित किया था, जिसमें पठन निर्देशों के क्रमशः चार चरणों में छात्र को अधिकाधिक जिम्मेदारी देते हुए स्वतंत्र पठन की दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। (इसकी समझ के लिए संलग्नक 06 में दी गयी तालिका का अवलोकन किया जा सकता है)

इस पठन निर्देश मॉडल द्वारा प्रस्तावित चार चरण[7] निम्नवत हैं–

1. शिक्षक द्वारा पठन मॉडलिंग तथा रणनीतियों की व्याख्या करना।
2. निर्देशित अभ्यास (गाइडेड प्रैक्टिस), जहाँ शिक्षक छात्रों को टास्क पूरा करने की क्रमशः अधिकाधिक जिम्मेदारी देते हैं।
3. छात्र द्वारा स्वतंत्र अभ्यास, इसके साथ–साथ शिक्षक द्वारा फीडबैक।
4. छात्र द्वारा रणनीतियों को वास्तविक पठन स्थितियों में लागू करना।

## परिणाम एवं परिचर्चा

शिक्षा के क्षेत्र में समझकर पढ़ना/पठन समझ के मुद्दा 1990 के दशक के मध्य से चर्चा विषय बना। इससे पहले पढ़ने के कौशलों पर ही अधिक जोर दिया जाता रहा। पढने के कौशलों पर जोर देने से बच्चों के रटने की क्षमता में कुछ बढ़ोतरी जरुर दिखलायी दी परन्तु बच्चों की पठन समझ/पढ़े हुए के बारे में अर्थ निर्माण कौशल में कमी आयी। इस तथ्य की तस्दीक कतिपय अंतर्राष्ट्रीय शोधों/सर्वेक्षणों (जैसे–PISA) से भी होती है। पाश्चात्य देशों में समझकर पढने/पठन समझ को लेकर कतिपय शोध हुए हैं। इन शोधों में बताया गया है कि सक्रिय, विचारशील एवं प्रवीण पाठक विभिन्न रणनीतियां अपनाते हुए पढ़ते हुए अपने लिए अर्थ निर्माण करते हैं। प्रेस्सले (1976)[8] का विचार है कि टेक्स्ट को पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद दृश्य और संवेदी (Sensory) छवियाँ (Images) सृजित करके ऐसा किया जा सकता है। हानसेन (1981)[9] के अनुसार इसके लिए पढ़े हुए टेक्स्ट से अनुमान लगाने के लिए टेक्स्ट के निष्कर्षों, आलोचनात्मक निर्णयों तथा अनूठी (Unique) विवेचना करने की जरुरत होती है। ब्राउन, डे एवं जोंस (1983)[10] का मत है कि जो पढ़ा गया है उसका संश्लेषण किया जाना चाहिए। एंडरसन एवं पीयरसन (1984)[11] का मत है कि पढने से पहले, पढने के दौरान और पढने के बाद प्रासंगिक, पूर्व ज्ञान (स्कीमा) को सक्रिय करके पाठक द्वारा अर्थ निर्माण किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में राफेल (1984)[12] का शोध निष्कर्ष है कि जो टेक्स्ट पढ़ा है उससे, उसके लेखक से और अपने आप से प्रश्नों को पूछकर पठन से अर्थ निर्मित किया जा सकता है। पलिंस्कार एवं ब्राउन[13] (1984) के विचार में पढने से अर्थ निर्माण के लिए टेक्स्ट में सबसे

महत्वपूर्ण विचार और प्रसंग (Theme) के बारे में विनिश्चय करना जरुरी है। इन शोध अध्ययनों से मेरे अध्ययन को एक सकारात्मक दिशा मिली। प्रथमतः पढना किसी पाठ्यवस्तु की मात्र 'कोडिंग–डिकोडिंग' नहीं है वरन इसमें पाठक, पाठ्य विषयवस्तु, सन्दर्भ तथा चिंतन प्रक्रिया भी समाहित है। और दूसरा–पढ़ने से पहले जरुरी है 'पढना सीखना'। अतः बच्चों को पढ़ने के लिए कहने से पहले जरुरी है उनको पढ़ना सिखाना। डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए रीडिंग वर्कशॉप के फ्रेमवर्क को तफसील से पढने के बाद इस दिशा में आगे कदम बढ़ाने की हिम्मत मिली, पठन कार्यशालाओं की व्यवस्थित योजना बनाने का मार्ग प्रशस्त हुआ। भारतीय भाषाओं का शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2009) और सबसे अधिक 'बच्चे की भाषा एवं अध्यापक' (प्रोफेसर कृष्ण कुमार, 1996) के गहन अनुशीलन ने तो एक तरह से बाध्य कर दिया कि बच्चों की समझकर पढ़ने के कौशल और क्षमता विकसित करने के लिए पठन कार्यशालाएं आयोजित की जाएँ।

पठन कार्यशालाओं और इनके अनुभवों को साझा करने से पहले पठन कार्यशालाओं में सम्मिलित बच्चों के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों को स्पष्ट करना समीचीन होगा। राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय पुड्कुनी, उत्तराखंड के जनपद बागेश्वर के अति दुर्गम क्षेत्र में अवस्थित है। विद्यालय के सेवित क्षेत्र के गाँवों में संचार सेवाओं का भाव है। घरों पर स्थानीय बोली कुमायूनी को विशेष तरीके से (Accent) में बोला जाता है, घरों में आपसी बात–चीत में, संवाद में इसी का प्रयोग किया जाता है। इस तरह से बच्चों की परिवेशीय भाषा कुमायूनी है और विद्यालय की भाषा हिंदी इन बच्चों के सन्दर्भ में एक तरह से दूसरी भाषा ठहरती है। इस क्षेत्र में दैनिक अखबार भी केवल विद्यालय में ही आता है वह भी एक दिन बाद। घरों में बच्चों को पाठ्य पुस्तक से इतर बाल साहित्य/पत्रिकाएं उपलब्ध नहीं हैं। विद्यालय के छोटे से पुस्तकालय में कुछ पुस्तकें उपलब्ध हैं परन्तु बच्चों की पठन रुचि के अनुरूप नहीं हैं। विद्यालय में हिंदी भाषा पढ़ाने वाले शिक्षक का पद फरवरी 2018 से रिक्त है। इस कारण से बच्चे हिंदी विषय में पढ़ने–लिखने की अतिरिक्त चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इस विषय को अस्थायी व्यवस्था के रूप में कक्षा 6 से कक्षा 10 तक सभी शिक्षक मिलजुल कर पढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से एक कक्षा 9 में स्वयं शोधकर्त्ता हिंदी विषय में शिक्षण करने का प्रयास कर रहा है। हिंदी विषय में विशेषज्ञ शिक्षक न होने के कारण, संस्थाध्यक्ष होने के नाते शोधकर्त्ता के सामने चुनौती है कि बच्चे यदि समझकर पढने का कौशल हासिल कर सकें, पठन जिम्मेदारी ले सकें तो पठन जिम्मेदारी ले सकें तो हद तक हिंदी विषय में पढाई–लिखाई के नुकसान को कम किया जा सकता है। इसी मंतव्य से कक्षा 6 से कक्षा 8 के 38 बच्चों के लिए पठन कार्यशाला आयोजित की गयीं।

## पठन कार्यशालाएं

मैंने विद्यालय में 16 अक्टूबर 2017 से प्रधानाध्यापक के रूप में काम करना शुरू किया।

विद्यालय में पहले दिन से ही मैंने बच्चों की रुचि के अनुरूप पाठ्य पुस्तकों से इतर साहित्य/पत्रिकाओं की कमी महसूस की। सो, अपनी पहली कोशिश के रूप में बच्चों के लिए बाल साहित्य/पत्रिकाएं जुटाने का प्रयास किया। अजीमजी प्रेमजी डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट, बागेश्वर ने इस मामले में बहुत मदद की। बच्चों के लिए पठनीय साहित्य के साथ–साथ एकलव्य की बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' नियमित रूप से उपलब्ध करायी और अभी भी उपलब्ध करा रहे हैं। बच्चे तो इस पत्रिका पर जैसे टूट ही पढ़ते हैं। मेरा विश्वास था कि बच्चे जब नियमित रूप से बारी–बारी से बाल साहित्य/चकमक आदि पत्रकाएँ पढ़ ही रहे हैं तो कुछ न कुछ समझ ही रहे होंगे/समझकर ही पढ़ रहे होंगे। परन्तु मेरा यह विश्वास निराधार साबित हुआ जब एक दिन विद्यालय के छोटे से पुस्तकालय में बच्चों से बातचीत में मैंने बच्चों से पूछ लिया कि अभी तक आपने जो भी पढ़ा है उसमें से कुछ सुनाईये। बच्चे पत्रिकाओं/बाल पुस्तिकाओं को खोजने लगे। उनके इस व्यवहार से इस बात का इशारा मिला कि बच्चों ने जो पढ़ा है, उसी पाठ/अध्याय को खोज रहे हैं जिससे उस पाठ/अध्याय को हूबहू सुना सकें और उन्होंने ऐसा किया भी। यह इस बात का एक पुख्ता साक्ष्य था कि उन्होंने पढ़ा तो है परन्तु जो पढ़ा है उसके आधार पर अर्थ निर्मित करने में असमर्थ रहे हैं अर्थात समझकर नहीं पढ़ा है। अतः 'पढने' से पहले 'पढ़ना सीखना' जरुरी है। एक और अनुभव साझा करना चाहूँगा, जिससे यह बात पुख्ता ढंग से स्थापित होती है। दिसंबर 2019, के पहले हफ्ते की बात है। कक्षा 8 में हिंदी विषय पढ़ा रहे अध्यापक के अवकाश में होने के कारण व्यवस्था वादन के तहत मैं कक्षा में था। बच्चों से पढ़ने के बारे में कहा गया तो वे असमंजस में नजर आए, पुनः कहने पर उनके कुछ सवाल सामने आए। कौन सी किताब पढ़नी है ? कौन सा पाठ पढ़ना है ? कहाँ से पढ़ना है ? आदि। इससे यह स्पष्ट था कि क्या पढ़ना है ? क्यों पढ़ना है ? कैसे पढ़ना है ? कब पढ़ना है ? इस बारे में बच्चे पूरी तरह से शिक्षक पर निर्भर हैं। भाषा के एक पाठ को पढ़ने को कहा गया तो बच्चों के कुछ विशेष व्यवहार सामने आए, जैसे 8G2, 8G7 और 8B3 पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों को देखने लगे। कक्षा के अधिकाँश बच्चे असमंजस में नजर आए कि पाठ को कहाँ से पढ़ना शुरू करें। केवल 8G2 और 8B2 ने पाठ को एकदम शुरुआत से पढ़ना प्रारम्भ किया। इस अवलोकन से यह तथ्य स्पष्टता से सामने आया कि इस बात की जरुरत है कि बच्चे पढ़ने की जिम्मेदारी लेना सीखें तथा क्या पढ़ना है ? क्यों पढ़ना है ? कैसे पढ़ना है ? कब पढ़ना है ? के मामले में उनकी शिक्षक पर निर्भरता क्रमशः कम होती जाए। अतः इन दोनों उद्देश्यों के मध्येनाजर बच्चों की पठन कार्यशाला आयोजित करने का विनिश्चय किया गया। इन कार्यशालाओं के आयोजन के लिए डेबी मिलर (2006) द्वारा सुझाए गए रीडिंग वर्कशॉप के फ्रेमवर्क को विद्यालय एवं शोध अध्ययन की जरूरतों के हिसाब से संदर्भीकृत करके उपयोग में लाया गया। बच्चों को क्रमशः पठन जिम्मेदारी देने के लिए पियर्सन एवं ग्लान्घर द्वारा वर्ष 1983 में प्रस्तुत ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिल्टी मॉडल को उपयोग में लाया गया। दरअसल डेबी मिलर (2006) ने प्रस्तावित रीडिंग वर्कशॉप के फ्रेमवर्क

में ग्रेजुअल रिलीज ऑफ रेस्पोंसिबिल्टी मॉडल को समाहित किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के क्रम में आयोजित पठन कार्यशालाओं का विवरण निम्न तालिका–02 में दिया गया है–

**तालिका–02**

**पठन कार्यशालाओं का विवरण**

| क्र0 सं0 | तिथि | वार | पठन कार्यशाला की गतिविधि | पठन विषयवस्तु | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | पाठ/कविता/कहानी | लेखक | श्रोत |
| 1 | 18.01.2020 | शनिवार | पठन मॉडलिंग | चीनी चोर (कविता) | प्रभात | चकमक, नवम्बर 2016 |
| | | | | छतरी | मंजूर एहतेशाम | चकमक, फरवरी 2015 |
| 2 | 25.01.2020 | शनिवार | समूह पठन/समूह प्रस्तुतीकरण | स्कूल का पहला दिन | आयुषी | चकमक, फरवरी-मार्च 2015 |
| 3 | 01.02.2020 | शनिवार | समूह पठन/समूह प्रस्तुतिकरण | बरखा तुम्हारा आना | दिलीप चिंचालकर | चकमक, जून-जुलाई 2017 |
| 4 | 08.02.2020 | शनिवार | समूह पठन/ स्वतंत्र प्रस्तुतिकरण | पाचन | उमा सुधीर | चकमक, जुलाई 2018 |
| 5 | 15.02.2020 | शनिवार | समूह पठन/स्वतंत्र प्रस्तुतीकरण | इंसानों के आस-पास रहने वाले जानवर | जितेश शेलके एवं कालू राम शर्मा | चकमक, जुलाई 2019 |
| 6 | 22.02.2020 | शनिवार | पठन मॉडलिंग | हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता) | शिव मंगल सिंह सुमन | कक्षा 7 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-2 |
| 7 | 29.02.2020 | शनिवार | पठन मॉडलिंग | बचपन | कृष्णा सोबती | कक्षा 6 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-1 |
| 8 | 07.03.2020 | शनिवार | समूह पठन/समूह प्रस्तुतिकरण | वह चिड़िया जो (कविता) | केदारनाथ अग्रवाल | कक्षा 6 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-1 |
| | | | | कठपुतली (कविता) | भवानी प्रसाद मिश्र | कक्षा 7 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-2 |
| | | | | ध्वनि (कविता) | सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला | कक्षा 7 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-3 |
| 9 | 14.03.2020 | शनिवार | समूह पठन/समूह प्रस्तुतिकरण | नादान दोस्त | प्रेमचंद | कक्षा 6 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-1 |
| | | | | दादी माँ | शिवप्रसाद सिंह | कक्षा 7 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-2 |
| | | | | लाख की चूड़ियाँ | कामतानाथ | कक्षा 8 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-3 |
| 10 | 21.03.2020 | शनिवार | समूह पठन/ स्वतंत्र प्रस्तुतिकरण | चाँद से थोड़ी सी गप्पें (दस ग्यारह साल की लड़की) | शमशेर बहादुर सिंह | कक्षा 6 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-1 |
| | | | | हिमालय की बेटियां | नागार्जुन | कक्षा 7 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-2 |
| | | | | दीवानों की हस्ती (कविता) | भगवती चरण वर्मा | कक्षा 8 की भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग-3 |

इस प्रकार 18 जनवरी 2020 से 21 मार्च 2020 तक प्रति सप्ताह (शनिवार को) 2 घंटे की 10 पठन कार्यशालाएं आयोजित की गयीं। कार्यशाला के लिए शनिवार का चयन किया गया। विद्यालय में प्रत्येक कार्यकारी शनिवार को मध्यावकाश के बाद 'बाल सभा' आयोजित

की जाती हैं। लगभग ढाई घंटे का निर्विघ्न समय उपलब्ध रहता है। अतः विद्यालय के शिक्षकों से विचार–विमर्श करके आगामी 10 सप्ताहों तक पठन कार्यशालाओं के आयोजन का निर्णय लिया गया। इन कार्यशालाओं में बच्चों को भाषा सम्बन्धी कोई पाठ पढ़ाने के बजाय भाषा 'पढना सिखाने' का मंतव्य था और पढना सीखने में, समझकर पढना अन्तर्निहित है। इनमें से 3 पठन कार्यशालाओं में फैसिलिटेटर (स्वयं शोधकर्त्ता) द्वारा पठन मॉडलिंग की गयी। इन मॉडलिंग में पाठ को जोर से पढ़ना, पाठ के महत्वपूर्ण अंशों को श्यामपट्ट पर लिखना, पाठ की समझ को अपने शब्दों में बताना और लिखना, पाठ की विषय वस्तु से सम्बंधित/मिलती–जुलती किसी घटना/अनुभव को अपने शब्दों में बताना/लिखना शामिल था। इस मॉडलिंग का मुख्य उद्देश्य पठन कार्यशाला में बच्चों को यह अनुभव देना था कि पाठ को समझते हुए पढने में कौन–कौन सी प्रक्रियाएं अपनायी जा सकती हैं ? अपनी समझ को किस प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है ? अपने लिए किस तरह से अर्थ निर्मित किया जा सकता है ? इन पठन कार्यशालाओं का संयोजन इस प्रकार से किया गया था कि पठन मॉडलिंग कार्यशाला के बाद समूह पठन–समूह प्रस्तुति, समूह पठन–स्वतंत्र/एकल प्रस्तुति के अवसर सभी बच्चों को मिलें। पठन कार्यशालाओं के लिए पाठ्य विषय वस्तु का चयन सावधानी पूर्वक किया गया जिसका व्यौरा उक्त तालिका–02 में दिया गया है। शुरूआती पांच पठन कार्यशालाओं में चकमक से ऐसे पाठ (गद्य एवं कवितायें) चुने गए जो बच्चों की रुचि के अनुकूल हों तथा पाठ की विषय वस्तु बच्चों के सन्दर्भ से जुडती हों। 'चकमक' से पाठ्य विषय वास्तु चयन का मुख्य कारण यह था कि बच्चे पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के अनुसार पाठ को पढ़ने के लिए अभिमुखीकृत प्रतीत होते थे। बच्चे समझते थे कि किसी पाठ को इसलिए पढ़ना जरुरी है कि इसके आधार पर पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकें। वस्तुतः बच्चे पाठ को समझने के बजाय प्रश्नों के उत्तर ढूँढने और उनको याद कर लेने को प्राथमिकता दे रहे थे, स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो प्रश्नों के उत्तर रटना जरुरी समझते थे। अतः इस पठन व्यवहार में बदलाव के लिए 'चकमक' से शुरूआती पठन कार्यशालाओं में पाठ्य विषय वस्तु का चयन किया गया। इन पाठों अंत में न तो प्रश्न थे और न ही कोई सवाल पूछने की अपेक्षा थी। इस प्रकार से इन पांच शुरूआती कार्यशालाओं का आयोजन 'पढ़ना सीखने', 'पढ़कर अपनी समझ को अभिव्यक्त करना' और 'इस समझ को अपने अनुभव से जोड़कर अर्थ निर्मित करने' के उद्देश्य से किया गया था। बाद की 5 पठन कार्यशालाओं में पाठ्य विषय वस्तु को बच्चों की कक्षानुसार भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 1, भाग 2 एवं भाग 3 से चनित किया गया था (इसका व्यौरा उक्त तालिका–02 में दिया गया है)। इन पांच पठन कार्यशालाओं में से शरुआत की दो कार्यशालाओं में फैसिलिटेटर (शोधकर्त्ता स्वयं) द्वारा पठन मॉडलिंग की गयी। इन दो कार्यशालाओं में एक गद्य पाठ और एक कविता पाठ को पठन विषय वस्तु के लिए चयनित किया गया। बाद की 5 पठन कार्शालाओं का उद्देश्य पहली पांच कार्यशालाओं के अनुभवों को लागू करने (एप्लीकेशन) की दृष्टि से किया गया। इन कार्यशालाओं के दौरान बच्चों के

व्यवहार (विशेषकर बच्चों के पठन व्यवहार), भाव–भंगिमाओं का अवलोकन एक अवलोकन अनुसूची (अवलोकन अनुसूची संलग्नक 03 में दी गयी है) के आधार पर किया गया।

## पठन कार्यशालाओं का अवलोकन

इन अवलोकनों का मुख्य मंतव्य यह जानना था कि समूह में/स्वतंत्र पठन के दौरान बच्चे किस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं ? पाठ को समझने के लिए समूह में किस तरह से अन्तःक्रिया कर रहे हैं ? अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए कौन सी प्रक्रिया अपना रहे हैं ? अपनी समझ को किस तरह से साझा कर रहे हैं ? पाठ्य वस्तु को समझ भी रहे हैं या पाठ/कविता को याद कर रहे हैं/रट रहे हैं। ये अवलोकन पठन मॉडलिंग कार्यशालाओं को छोड़कर अन्य सभी कार्यशालाओं में किये गए।

एकदम शुरूआती पठन कार्यशालाओं में बच्चों के व्यवहार से महसूस हुआ कि बच्चे अपनी बाल–सभा को मिस कर रहे हैं। सम्भवतः कार्यशाला भी उनको एक तरह की कक्षा लगी हो, जहाँ उनको कुछ पढ़ना है और बाद में इस पढ़े पाठ से प्रश्नों के उत्तर देने हैं लेकिन दूसरी ही कार्यशाला से बच्चों के व्यवहार एवं भाव–भंगिमाओं में सकारात्मक परिवर्तन आने लगे। बाद में तो बच्चों द्वारा रोज ही ऐसे पठन कार्यशालाओं की मांग होने लगी, विद्यालय की दैनिक पाठ्यचर्या की सीमा और दूसरा विद्यालय की समय–सारणी के अनुसार यह संभव नहीं था। परन्तु यह सर्वथा संभव है कि कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में विषय की पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने में ऐसे पठन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए। इन कार्यशालाओं के अवलोकन में बच्चों के निम्न व्यवहार/पठन व्यवहार नजर आए–

**अवलोकन तिथि 25.01.2020 (समूह पठन/समूह प्रस्तुतीकरण)**–यह पहली पठन कार्यशाला थी, जिसमें बच्चे समूह पठन का अभ्यास कर रहे थे और उनको पढ़े गए पाठ 'स्कूल का पहला दिन' को पढ़कर अपनी समझ के बारे में अपनी सामूहिक प्रस्तुति देनी थी। 8G2, 8B5, 6G5, 6G8, 6B2, 7G3, 7B1 एवं 7B5 समूह से तटस्थ दिखलायी दिए। समूह में अधिकाँश बच्चे पाठ को याद करते नजर आए। 8G8 का कहना था "पहले पाठ को याद कर लेते हैं, बाद में अपने समूह की बारी आने पर सुना देंगे।" 7G1 अपनी कापी में पेंसिल से कुछ लिखती है। सभी का जोर पढ़कर याद करने पर है। 6G7 समूह से कुछ पूछना चाह रही है परन्तु उसकी बात पर समूह कोई ध्यान नहीं देता है। प्रस्तुति के समय पाठ का कौन सा हिस्सा अच्छा लगा, लगभग सभी बच्चे यह बताने को उत्सुक नजर आए परन्तु क्यों अच्छा लगा, यह नहीं बता पाए। केवल 8B4, 8G9, 7G2, 7B4 तथा 6G8 ने यह बताने की कोशिश की कि उनको यह पाठ अच्छा क्यों लगा ? पठित विषय वस्तु के मूल भाव को बताने में दो तीन बच्चे ही सफल हो सके। पठित विषय वस्तु के बाद की घटनाओं का अनुमान लगभग सभी बच्चों ने लगाया। चूँकि पाठ स्कूल के पहले दिन से सम्बंधित था, सो बच्चों ने अपने स्कूल की दिनचर्या को ध्यान रखकर बातें बताने की कोशिश की। पठित विषय वस्तु से मिलती–जुलती

घटनाओं को बताने में बच्चों ने अपने स्कूली दिनों को याद किया परन्तु बहुत से बच्चों को अपने स्कूल के पहले दिन की याद नहीं थी। अतः बच्चों ने गर्मियों की छुट्टी के बाद के स्कूल के पहले दिन को याद किया जो पिछला एक–दो वर्ष पुराना था।

**अवलोकन तिथि 01.02.2020 (समूह पठन/समूह प्रस्तुतीकरकरण)–** यह बच्चों की दूसरी पठन कार्यशाला थी, जिसमें बच्चे समूह पठन का अभ्यास कर रहे थे और उनको दी गयी कविता 'बरखा तुम्हारा आना' को पढ़कर अपनी समझ के बारे में अपनी सामूहिक प्रस्तुति देनी थी। आज 8B5, 6G8, 7G3, एवं 7B5 को छोड़कर लगभग सभी बच्चे समूह में सक्रिय नजर आए। समूह में अधिकाँश बच्चे कविता को याद करते नजर आए। 8G8, 8G9, एवं 7G4 कविता को लय ताल के साथ याद कर रहे थे, ये बच्चे विद्यालय की बाल–सभा में भी अपने नृत्य एवं गायन की प्रस्तुतियां देते हैं। 6B2 का कहना था "कविता को तो याद ही करना पढ़ेगा और अपनी बारी आने पर कविता को सुना देंगे" 8B5 तटस्थ है, अपनी कापी में पेंसिल चित्र बना रहा है। 8G2 कविता की कुछ पंक्तियों को पेंसिल से अंडरलाइन कर रही है समूह उससे किताब को खराब न करने के लिए टोकता है, उसका कहना है कि ये लाइन बहुत अच्छी है। प्रस्तुति के समय कविता का कौन सा हिस्सा अच्छा लगा, लगभग सभी बच्चे यह बताने को उत्सुक नजर आए, क्यों अच्छा लगा, यह बताने की भी सभी बच्चों ने कोशिश की। वर्षा को लेकर बच्चों के परिवेशीय अनुभव बहुत समृद्ध हैं, जिस ग्रामीण क्षेत्र में जिस ग्रामीण क्षेत्र में बच्चे रहते हैं वहां अच्छी वर्षा होती है और बहुत बार वर्षा से जमीन धंसने की घटनाएं होती हैं। पठित विषय वस्तु के मूल भाव को बताने में दो तीन बच्चों के अलावा सभी बच्चे बताने में सफल रहे। कविता के बाद की घटनाओं का अनुमान लगभग सभी बच्चों ने लगाया, बच्चे अपने विगत अनुभवों के आलोक में इसे अच्छी तरह से बता सके। कविता की विषय वस्तु से मिलती–जुलती घटनाओं को बताने में बच्चों ने वर्ष उस वर्ष को याद किया जब उत्तराखंड में भारी बारिश के कारण बहुत नुकसान हुआ था। तीन बालिकाओं ने अपने गाँवों में वर्षा ऋतु में गाये जाने वाला एक स्थानीय लोक गीत, लय–ताल में गाकर सुनाया। आज के दिन की पठन कार्यशाला में लगभग सभी बच्चे जोश से भाग लेते नजर आए और उनका पठन व्यवहार भी बहुत हद तक सकारात्मक था। इससे बच्चों के पढने के बारे में एक पुष्ट साक्ष्य मिलता है, वह ये कि जब पाठ्य विषय वस्तु बच्चों के सन्दर्भ से जुडी हुई होती है तो बच्चे उसको पढने में रूचि प्रदर्शित करते हैं और पढ़े हुए को अपने सन्दर्भ से जोड़ने में सफल हो जाते हैं तो इससे पढ़े हुए को समझने और अर्थ निर्माण में बहुत मदद मिलती है। 'बच्चों की भाषा का सम्बन्ध उन अनुभवों से है जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं.....क्रियाकलापों और अनुभवों को आत्मसात करने और व्यक्त करने के लिए शब्दों की जरुरत होती है। कोई अनुभव जब पूरा हो चुकता है, उसके बाद भी वह शब्दों के जरिए उपलब्ध रहता है। बच्चे जिन चीजों/बातों के संपर्क में आते हैं, उनसे और घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने के लिए वे शब्दों की

मदद लेते हैं। दूसरी तरफ ऐसे शब्द जो बच्चों के सक्रिय अनुभव से नहीं जुड़े होते, उनके लिए खाली और बेजान रहते हैं, बच्चे का अनुभव बच्चे की भाषा का बड़ा हिस्सा होता है।'[14]

**अवलोकन तिथि 08.02.2020 (समूह पठन/स्वतंत्र प्रस्तुतीकरण)–** यह बच्चों की तीसरी पठन कार्यशाला है, जिसमें बच्चे समूह पठन का अभ्यास कर रहे हैं और उनको व्यक्तिगत/स्वतंत्र प्रस्तुति देनी है। आज का की पाठ्य विषय वस्तु है 'पाचन' जिसकी लेखिका उमा सुधीर हैं। विषय शरीर विज्ञान से सम्बंधित है और बच्चों की रूचि का है। आज सभी बच्चे समूह पठन में सक्रियता से भाग ले रहे हैं। लगभग सभी बच्चे किसी पेपर पर या अपनी कापी में कुछ लिखने/नोट्स बनाने में व्यस्त नजर आ रहे हैं। इसका एक कारण यह है कि आज सभी को अपनी स्वतंत्र प्रस्तुति देनी है। और दूसरा इससे यह संकेत मिल रहा है कि बच्चे अपनी समझ को बताने के लिए अपनी जिम्मेदारी का अहसास कर रहे हैं। आज आज बच्चों के पठन व्यवहार में कुछ भिन्न बाते भी नजर आ रहीं हैं, मसलन– दो तीन बच्चे अकेले पाठ को पढ़ रहे हैं, दो–दो और तीन–तीन के छोटे समूह भी नजर आ रहे हैं इसके साथ–साथ दो बड़े समूहों में भी पढने, नोट्स लेने का काम चल रहा है। स्वतंत्र/व्यक्तिगत प्रस्तुतियों में शुरुआत में कुछ बच्चों में घबराहट दिखलायी पड़ी परन्तु ज्यों–ज्यों प्रस्तुतीकरण आगे बढ़ते गए बच्चों की घबराहट भी कम होती गयी। कुछ बच्चों ने पाठ की समझ को बताने के साथ–साथ अपने परिवार और आस–पास के कुछ लोगों की हमेशा पेट खराब रहने की बात को भी बताया और बच्चों के अनुसार ऐसा उनकी पाचन की कमजोरी के कारण था। 8B5 ने अपने कुत्ते के बारे में बताया कि जब भी वह कुछ खाता है तुरंत उलटी कर देता है, ऐसा उसकी पचाने की कमी के कारण होता है। बच्चे पाठ्य विषय वस्तु को अपनी भूख, पाचन और स्वाद से जोड़ पा रहे हैं। बच्चों की आज की प्रस्तुतियों में पाठ्य विषय वस्तु को हूबहू बताने के बजाय अपने शब्दों और अनुभवों से जोड़कर बताने वाली प्रस्तुतियां अधिक रहीं। इसे यह अनुमान किया जा सकता है कि अब बच्चे पाठ्य विषय वस्तु को याद करने के बजाय समझने की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं। यह एक सकारात्मक लक्षण प्रतीत होता है। 'विद्यालयों में बालकों का भाषा प्रयोग संक्रियात्मक होना चाहिए न कि तोता रटंत।'[15]

**अवलोकन तिथि 15.02.2020 (समूह पठन/स्वतंत्र प्रस्तुतीकरण)–** यह बच्चों की चौथी पठन कार्यशाला है, जिसमें बच्चे समूह पठन का अभ्यास कर रहे हैं और उनको व्यक्तिगत/स्वतंत्र प्रस्तुति देनी है। आज का की पाठ्य विषय वस्तु है 'इंसानों के आस–पास रहने वाले जानवर' इस पाठ के लेखक जितेश शेलके एवं कालू राम शर्मा हैं। समूह पठन में बच्चों की सक्रियता एवं उत्साह से महसूस होता है कि विषय वस्तु उनकी रुचि के अनुकूल है। बच्चे जिस ग्रामीण परिवेश से आते हैं, वहां उनके घरों में पालतू जानवर हैं, बाघ द्वारा समय–समय पर उनके पालतू जानवरों को मार देने के बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव भी हैं, यह बात उनकी स्वतंत्र प्रस्तुतियों में स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आयी। 8B3 जिसका घर गाँव से कुछ दूर जंगल

के निकट है, ने बाघ द्वारा रात में कुत्ते पर झपटने और मार देने का एकदम सजीव व्यौरा अपनी प्रस्तुति में दिया। इस बच्चे ने पढ़े हुए पाठ को एकदम अपने पढ़े हुए पाठ को एकदम अपने शब्दों में बताया और कुछ खास जगहों पर स्थानीय बोली कुमायूनी का इस्तेमाल भी किया, जैसे भय, आश्चर्य को व्यक्त करने के लिए "ओ इज्जा", "अरे बाब्ब रे" आदि–आदि। आज बच्चों ने अपनी पसंद की विषय वस्तु के बारे में बताया और उनकी पसंद में पाठ के बजाय विषय का उल्लेख अधिक है। जैसे ग्रामीण जीवन की कहानी (उन्होंने किसी कहानी पाठ का कम ही उल्लेख किया), जानवरों और जंगल की कहानी, 8G8 को विभिन्न प्रकार के नृत्यों के बारे में पढने की इच्छा है (यह बालिका नृत्य में विशेष रुचि रखती है), 8B5 को यंत्रों का निर्माण किस प्रकार से होता है ? इस बारे में पढने का मन है (यह बच्चा विद्यालय में किसी चीज की मरम्मत, सुधारने की जरुरत हो तो बिना कहे इस काम में शामिल हो जाता है). बच्चों के इस व्यवहार से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बच्चे अपनी पठन अभिरुचियों को पहचानने की कोशिश कर रहे हैं और कुछ बच्चे तो एकदम स्पष्ट ऐसा कर पा रहे हैं। 'बच्चे के आस–पास जो कुछ हो रहा होता है, वह उसे सोच–विचार की छलनी से छान कर अपने भाषा संयंत्र का हिस्सा बना लेता है।'[16] इसके अतिरिक्त एक और बात ध्यान में रखनी जरुरी है कि भाषा की कक्षा में बच्चों की परिवेशीय भाषा/बोली के कुछ शब्द आते हैं तो इसको हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए वरन कोशिश यह होनी चाहिए कि शिक्षक बच्चे की घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के मध्य एक पुल बनाने का प्रयास करें, जिससे दोनों भाषाओँ के बीच आवाजाही बनी रहे।

**अवलोकन तिथि 07.03.2020 (समूह पठन/समूह प्रस्तुतीकरण)–** आज की पठन कार्यशाला में, बच्चों ने विगत कार्यशालाओं में समझते हुए पढ़ने की प्रक्रियाओं की सीखा है, जो अनुभव अर्जित किये है, उनको अपने भाषा विषय में लागू करने के उद्देश्य से आयोजित की गयी है। अतः बच्चों को कक्षा वार (6,7,8) भाषा की पाठ्य पुस्तक (वसंत भाग–1,2,3) से कविताओं के पाठ आबंटित किये गए हैं। इस कविता को पढ़कर बच्चों को समूहवार प्रस्तुतियां देनी हैं। आज कक्षावार तीन समूह बन गए हैं, बच्चे आज अधिक सहज हैं। आज बच्चों के पास अपनी पाठ्य पुस्तक है और इसका स्वतंत्र इस्तेमाल कर पा रहे है। बहुत से बच्चे पुस्तक में ही कविता की कुछ पंक्तियों को पेन से रेखांकित कर रहे हैं (संभवतः यह व्यवहार उन्होंने पठन की मॉडलिंग कार्यशाला से ग्रहण किया है)। किसी भी बच्चे ने कविता के अंत में दिए गए प्रश्नों पर ध्यान नहीं दिया। समझकर पढ़ने की दृष्टि से यह एक सकारात्मक लक्षण प्रतीत होता है। चूँकि बच्चों को सामूहिक प्रस्तुति देनी है अतः एक–आध बच्चे को छोड़कर लगभग सभी इसको तैयार करने में व्यस्त हैं। अब मामला कक्षावार प्रस्तुति का है, संभवतः कक्षा द्वारा अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करने की भावना से सभी कक्षा समूह फोकस्ड हैं। कक्षावार सभी प्रस्तुतियों में बच्चों ने कविता के मूल भाव को बताने की कोशिश की, किसी भी समूह ने कविता की पंक्तियाँ सुनाने के बजाय कविता से उनके मन में जो भाव आए उसे बताने की कोशिश

की। कक्षा 6 समूह ने स्थानीय पक्षी घुघुती (कबूतर से मिलता–जुलता पक्षी) का चित्र बनाया और 8B5 घुघुती की आवाज निकालकर मनोरंजक स्थिति सृजित की। इस पक्षी को स्थानीय लोक–कथाओं में विशेष दर्जा प्राप्त है। सभी कक्षाओं की प्रस्तुतियों से यह अनुमान लगाने में मिलती है कि बच्चे समझकर पढ़ना सीख रहे हैं, कविता पढ़ने का आनन्द ले रहे हैं। भाषा विषय का एक अहम् उद्देश्य काव्य का रसास्वादन करना भी है। यदि बच्चे ऐसा करने में सक्षम हो जाते हैं तो कविता को याद करके प्रश्नों का उत्तर देना गौण हो जाएगा। कविता/गद्य पाठ पर बच्चे अपनी समझ बना सकें, अपने लिए अर्थ निर्मित कर सकें तो कविता/गद्य पाठ से सम्बंधित प्रश्नों का उत्तर देने में भी सफल रहेंगे।

**अवलोकन तिथि 14.03.2020 (समूह पठन/समूह प्रस्तुतीकरण)–** आज की बच्चों की कक्षावार दूसरी पठन कार्यशाला हैं। बच्चों को कक्षावार सामूहिक पठन करना है और कक्षावार सामूहिक प्रस्तुति देनी है। कक्षावार तीन अलग–अलग गद्य पाठ समूह में पढ़ने हैं। आज बच्चों में सामूहिकता का भाव अधिक सघन नजर आता है। विगत की प्रस्तुतियों में दिए गए फीड बैक के आलोक में बच्चों के सामूहिक पठन के व्यवस्थित तरीके नजर आ रहे हैं। आज कक्षा 7 के समूह ने सामूहिक पठन की सामूहिक पठन की जिम्मेदारियों को बांटने की कोशिश की है। 7G4 ने इसमें पहल की है, और उसने जोर से सभी के लिए पाठ पढने की जिम्मेदारी ली तथा 7B5 से गद्य पाठ की महत्वपूर्ण बातें कापी में लिखने को कहा। इसके साथ 7G4 ने सभी बच्चों से कहा कि जहाँ पर भी उनको कोई बात समझ में नहीं आती है, उसको नोट कर लें, बाद में इस बारे में बात की जायेगी। आज की एक और विशेष बात अवलोकन में सामने आयी, वह यह है कि कक्षा 8 के बच्चों ने गद्य पाठ में दिए गए कठिन शब्दों के अर्थ समझने के लिए विद्यालय पुस्तकालय से हिंदी शब्दकोश का इस्तेमाल किया। आज समूहों में विचार–विमर्श का स्तर अधिक गहन नजर आया। कक्षा 6 के समूह ने प्रेमचंद की और कहानियां पढने की इच्छा प्रकट की। विगत दिनों की तुलना में कक्षावार समूहों की प्रस्तुतियां व्यवस्थित एवं पढ़े हुए गद्य पाठ की समझ को कमोवेश अभिव्यक्त करती हुए प्रतीत हुई। इससे यह विश्वास पुख्ता होता है कि बच्चे समझकर पढने की प्रक्रियाओं और इसके तौर–तरीकों को अपने पठन व्यवहार में प्रदर्शित कर रहे हैं। अगली पठन कार्यशाला को समूह पठन एवं स्वतंत्र प्रस्तुतिकरण प्रारूप में आयोजित करने का उपयुक्त अवसर है। इससे बच्चे को न केवल अपनी समझ को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का मौका मिलेगा बल्कि इससे पठन सम्बन्धी आत्मविश्वास को बढ़ाने में भी मदद मिल सकेगी।

**अवलोकन तिथि 21.03.2020 (समूह पठन/स्वतंत्र प्रस्तुतीकरण)–** आज की बच्चों की कक्षावार तीसरी पठन कार्यशाला हैं। बच्चों को कक्षावार सामूहिक पठन करना है और कक्षावार स्वतंत्र प्रस्तुतियां देनी हैं। शोध के क्रम में आयोजित यह अंतिम पठन कार्यशाला है। आज की कार्यशाला की पाठ्य विषय वस्तु, कक्षा 6 और कक्षा 7 के लिए गद्य पाठ हैं और कक्षा 8 के लिए कविता।

आज सामूहिक पठन में व्यस्तता के साथ–साथ बच्चे अपने पठन व्यवहार में विविधता का प्रदर्शन कर रहे हैं। कुछ बच्चे सामूहिक पठन के बाद पाठ को पुनः पढ़ रहे हैं, पाठ के उन हिस्सों को पेन से चिन्हित कर रहे हैं जो उनकी दृष्टि में महत्वपूर्ण है। 6G3, 8G9 और 7B1 पाठ में खाली जगह पर कुछ लिख रहे हैं। आज समूह पठन के बाद व्यक्तिगत/स्वतंत्र प्रस्तुतियां होनी है, संभवतः इस कारण से प्रत्येक कक्षा समूह में एक–दो या दो–तीन बच्चे व्यग्र नजर आ रहे हैं। आज बच्चों में अपनी कक्षा समूह से बाहर के समूह से भी बात–चीत हुई है। 7G3 कुछ पूछने के लिए कक्षा 8 के समूह में 7G9 के पास गयी (इस बच्ची का विगत दिनों की पठन कार्यशालाओं में अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन रहा है), 7B5 इसी प्रकार से अपनी कक्षा निम्न कक्षा 6 समूह में 6B2 के पास गया (ये दोनों आपस में घनिष्ठ मित्र हैं), लगभग 60 प्रतिशत बच्चों ने हिंदी शब्दकोश का इस्तेमाल किया। कुछ गिने–चुने बच्चों को छोड़कर (इन बच्चों के साथ अभी और काम करने की जरुरत है) लगभग सभी बच्चों की प्रस्तुतियां व्यवस्थित और समझ को प्रदर्शित करने वाली या इसके करीब हैं। 7G4 ने अपनी प्रस्तुति के अंत में कहा 'इस तरह से पढ़ना तो बहुत मजेदार है'। 7B1 का कहना है 'प्रश्नों के उत्तर याद करने में हालत खराब हो जाती है और कुछ दिनों बाद भूल जाते है, फिर याद करना पड़ता है पर मुझे आज का पाठ समझ में आ गया है अब इसे याद करने की जरुरत नहीं है'। 8G6 का कहना है 'पाठ जब समझ में आ जाए तो फिर किसी भी तरह के सवाल का जवाब दिया जा सकता है, किसी कविता को अपने शब्दों में कहानी की तरह भी तो सुनाया जा सकता है'। बच्चों के फीड बैक इस बारे में आश्वस्त करते हैं कि कुछ बच्चे समझकर पढ़ने की प्रक्रिया को समझ रहे है और निश्चित ही कुछ बच्चे इस दिशा में अग्रसर हैं। ऐसे बच्चों की संख्या (कक्षा 6 में 2, कक्षा 7 में 1 तथा कक्षा 8 में 3) तुलनात्मक रूप से बहुत कम है जिनके साथ कुछ और काम करने की जरुरत है।

## बच्चों के साथ बातचीत

बच्चों के साथ इस बातचीत का मुख्य उद्देश्य बच्चों की पठन अभिरुचि को जानना–समझना, पढने में आने वाली चुनौतियों को समझना तथा बच्चों द्वारा पढने और समझने के लिए अपनायी जाने वाली रणनीतियों के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करना था। इसके इसके आधार पर शोध के क्रम में प्रस्तावित पठन कार्यशालाओं को कारगर तरीके से डिजाईन किया जा सके। यह बातचीत पठन कार्यशालाओं से ठीक पहले 15 जनवरी से 17 जनवरी 2020 तक की गयी। बातचीत खुले प्रश्नों के आधार पर कक्षावार की गयी (संलग्नक संख्या 02 में बातचीत के प्रमुख बिंदु दिए गए हैं)।

**कक्षा 8 के साथ बातचीत (15.01.2020)–** कक्षा 8 में 18 बच्चे नामांकित हैं, जिनमें 10 बालिकाएं और 8 बालक हैं। 5 बालक और 6 बालिकाओं को पढना अच्छा लगता है, इनमें से 2 बालक और 2 बालिकाएं बता सकीं कि उनको पढ़ना अच्छा क्यों लगता है। 3 बालिकाओं

और 1 बालक को पढ़ना पसंद नहीं है, 8ळ5 का कहना था 'पढ़ने में याद करना पड़ता है, कुछ दिनों बाद भूल जाते हैं, फिर से याद करना पड़ता है'। 6 बालक और 7 बालिकाओं ने अपनी पसंद की पाठ्य वस्तु पढ़ने की इच्छा व्यक्त की, 2 बालक और 3 बालिकाओं ने शिक्षक द्वारा बताये गए पाठ पढ़ने की बात कही। कक्षा के 2 बालकों और 5 बालिकाओं को समूह में पढ़ना पसंद है शेष बालक और बालिकाओं को अकेले पढ़ना अच्छा लगता है। 6 बालक और 4 बालिकाएं दूसरों से मदद लेने का विचार रखते हैं (यहाँ पर उल्लेखनीय है बालिकाएं इस तरह की मदद केवल बालिकाओं से लेना चाहती हैं, यह जेंडर से जुदा जटिल मुद्दा है और इस मुद्दे पर अलग से अध्ययन की जरुरत है)। पढ़े हुए को समझने के लिए 8 बालिकाओं और 6 बालकों ने याद करना जरुरी बताया तथा 2 बालिकाएं और 2 बालक इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बता सके। किसी विषय वस्तु को पढ़ने के दौरान अपने जीवन की घटना से जोड़ने के बारे में 3 बालिकाओं और 4 बालकों ने बताया कि पढ़ते समय कुछ बातें याद तो आती हैं परन्तु बाद में हमें याद नहीं रहती, पढ़ा हुआ पाठ याद करना जरुरी है। 8G7 का कहना था 'जब पाठ के सवालों के उत्तर पाठ से ही लिखने हैं तो पाठ याद करना जरुरी है, अपने जीवन की घटना को पाठ से जोड़ने से क्या फायदा'। यह बात पढ़ाने के तौर–तरीकों के साथ–साथ आंकलन/मूल्यांकन के प्रचलित तरीकों में बदलाव की ओर इशारा करती है। पाठ पढने के बाद पाठ की मुख्य विषय वस्तु के नोट्स बनाने के बजाय प्रश्नों के उत्तर लिखना (केवल 8B2 को छोड़कर) सभी ने जरुरी बताया। 8B2 का कहना था 'यदि पाठ के सारांश को अपने शब्दों में लिख लिया जाए तो किसी भी सवाल का जवाब अपने शब्दों में लिखा जा सकता है'। पाठ से जुड़ी अपने जीवन की घटनायें सुनाने के बारे में बच्चों की प्रतिक्रिया सकारात्मक थी। 8G10 का कहना था 'कोई गुरु जी हमसे हमारे अनुभव सुनने को तैयार ही नहीं रहते'। पढ़ने के बाद अपनी समझ को साझा करने के बारे में 3 बालक और 5 बालिकाएं सहमत थीं। कुछ बच्चों (विशेषकर बालिकाओं को) को इसमें अपनी हंसी उड़ाए जाने का भय सामने आया। अपनी पसंद की विषय वस्तु कहाँ मिल सकती है ? इस बारे में अधिकाँश बच्चों के उत्तर पुस्तकालय था। बच्चे ऐसे ग्रामीण परिवेश में रहते हैं, जहाँ विद्यालय के अतिरिक्त कहीं और पठन सामग्री की उपलब्द्धता नहीं है, ऐसे में बच्चों की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया मानी जा सकती है।

**कक्षा 6 के साथ बातचीत (16.01.2020)–** कक्षा 6 में 11 बच्चे नामांकित हैं, जिनमें 8 बालिकाएं और 3 बालक हैं। 1 बालक और 5 बालिकाओं को पढना अच्छा लगता है, इनमें से 3 बालिकाएं बता सकीं कि उनको पढ़ना अच्छा क्यों लगता है। 5 बालिकाओं और 2 बालकों को पढ़ना पसंद नहीं है, 6G3 का कहना था 'पढ़कर कुछ समझ में नहीं आता तो याद करना पड़ता है, इम्तिहान में प्रश्नों के उत्तर तो लिखने ही पड़ेंगे'। 2 बालकों और 6 बालिकाओं ने अपनी पसंद की पाठ्य वस्तु पढ़ने की इच्छा व्यक्त की, 1 बालक और 2 बालिकाओं ने शिक्षक द्वारा बताये गए पाठ पढ़ने की बात कही। कक्षा के 3 बालकों और 4 बालिकाओं को समूह में

पढ़ना पसंद है शेष बालक और बालिकाओं को अकेले पढ़ना अच्छा लगता है। 2 बालक और 5 बालिकाएं दूसरों से मदद लेने का विचार रखते हैं। पढ़े हुए को समझने के लिए 6 बालिकाओं और 2 बालकों ने याद करना जरुरी बताया तथा 1 बालिकाएं और 1 बालक इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बता सके। 6G7 का कहना था कि 'पाठ को पढने के तुरंत बाद प्रश्नों के उत्तर लिखना जरुरी है, उसे बाद में याद भी किया जा सकता है'। किसी विषय वस्तु को पढ़ने के दौरान अपने जीवन की घटना से जोड़ने के बारे में 4 बालिकाओं और 2 बालकों ने बताया कि ऐसा करना ठीक होगा परन्तु यह किस प्रकार से उनको समझने में मदद करेगा, यह स्पष्ट रूप से नहीं बता सके। 6B2 का कहना था कि 'जिसने भी पाठ लिखे हैं, उसने भी तो अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर ही लिखा होगा। हमको भी यह सिखाया जाना चाहिए'। पाठ पढने के बाद पाठ की मुख्य विषय वस्तु के नोट्स बनाने के बजाय प्रश्नों के उत्तर लिखना सभी बच्चों ने जरुरी बताया। पाठ से जुड़ी अपने जीवन की घटनायें सुनाने के बारे में बच्चों की प्रतिक्रिया सकारात्मक थी। 6B2 'मैं कक्षा में ऐसी घटनाएं सुनना चाहता हूँ लेकिन कक्षा के बच्चे मेरी हंसी उड़ाते हैं'। पढ़ने के बाद अपनी समझ को साझा करने के बारे में 2 बालक और 4 बालिकाएं सहमत थीं। अपनी पसंद की विषय वस्तु कहाँ मिल सकती है ? इस बारे में अधिकाँश बच्चों ने उत्तर में अपनी विषय की पाठ्य पुस्तकों के पाठों के नाम लिए। 6G7 ने 'चकमक' का नाम लिया (यह बच्ची जब भी समय मिले पुस्तकालय में कुछ न कुछ पढ़ती नजर आती है)

**कक्षा 7 के साथ बातचीत (17.01.2020)–** कक्षा 7 में 9 बच्चे नामांकित हैं, जिनमें 4 बालिकाएं और 5 बालक हैं। 3 बालकों और 2 बालिकाओं को पढना अच्छा लगता है, इनमें से 2 बालक और 1 बालिका बता सकीं कि उनको पढ़ना अच्छा क्यों लगता है। 2 बालिकाओं और 2 बालकों को पढ़ना पसंद नहीं है, 7G1 का कहना था 'मेरी पसंद का तो विद्यालय में कुछ पढने को मिलता ही नहीं, मुझे तो ऐसे गीत पसंद हैं जिनको गाया जा सके और जिन पर नाच किया जा सके'। (इस बच्ची की स्वाभाविक रुचि नृत्य और गायन में है)। 3 बालकों और 1 बालिका ने अपनी पसंद की पाठ्य वस्तु पढ़ने की इच्छा व्यक्त की, 2 बालक और 3 बालिकाओं ने शिक्षक द्वारा बताये गए पाठ पढ़ने की बात कही। कक्षा के 4 बालकों और 2 बालिकाओं को समूह में पढ़ना पसंद है शेष बालक और बालिकाओं को अकेले पढ़ना अच्छा लगता है। 3 बालक और 1 बालिका दूसरों से मदद लेने का विचार रखते हैं। पढ़े हुए को समझने के लिए 3 बालिकाओं और 4 बालकों ने याद करना जरुरी बताया तथा 1 बालिका और 1 बालक इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बता सके। 7G4 का कहना था कि 'पाठ को पढने समय प्रश्नों के उत्तर भी ढूंढ लेने चाहिए'। किसी विषय वस्तु को पढ़ने के दौरान अपने जीवन की घटना से जोड़ने के बारे में कोई भी बच्चा स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं बता सका। पाठ पढने के बाद पाठ की मुख्य विषय वस्तु के नोट्स बनाने के बजाय प्रश्नों के उत्तर लिखना सभी बच्चों ने जरुरी बताया। पाठ से जुड़ी अपने जीवन की घटनायें सुनाने के बारे में बच्चे

कुछ नहीं बता सके, बातचीत में बच्चों ने बहुत सारी घटनाओं को सुनाया परन्तु इसको किसी पाठ से जोड़ने के बारे में अस्पष्ट थे। पढ़ने के बाद अपनी समझ को साझा करने के बारे में 4 बालक और 2 बालिकाएं सहमत थीं। अपनी पसंद की विषय वस्तु कहाँ मिल सकती है ? इस बारे में अधिकाँश बच्चों ने अपनी भाषा की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग–2 के पाठों के नाम देखकर बताया। 7G3, 7G4 ने 'चकमक' में प्रकाशित कुछ कविताओं को सुनाया। ये इनको अच्छी तरह से याद थी परन्तु कविता के मूल भाव को अपने शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकीं।

## अध्ययन के निहितार्थ

3 माह से कुछ अधिक समय तक के चले इस शोध अध्ययन से इस बात को गहराई से समझने में मदद मिली कि बच्चों के लिए पढ़ना सीखना क्यों जरुरी है। समझकर पढ़ने के लिए कौन सी रणनीतियां कारगर साबित हो सकती हैं। पढ़कर अपनी समझ बनाने में और अर्थ निर्माण में बच्चों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समझकर पढ़ने और पठन समझ को बढ़ाने में पठन कार्यशालाएं किस प्रकार उपयोगी हो सकती है। इस प्रक्रिया में किस तरह से शिक्षक द्वारा फीड बैक देकर पढ़े हुए को समझने और अपने लिए अर्थ निर्माण में मदद दी जा सकती है। इस अध्ययन के प्रमुख निहितार्थ निम्नवत सूचीबद्ध किए जा सकते हैं–

- पढ़ना सीखने में बच्चों की पठन कार्यशालाएं उपयोगी हो सकती है। प्रस्तुत अध्ययन के आलोक में यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है। अव्वल तो इस प्रकार की छोटी–छोटी कार्यशालाएं कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं का हिस्सा बननी चाहिए, विशेषकर भाषा विषय में 'पढ़ना सीखने में' ऐसी कार्यशालाएं बहुत उपयोगी हो सकती हैं। 'बच्चे के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किन्तु मजबूत ताकत की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रूचियों, क्षमताओं, यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है।'[17] स्कूली स्तर तक पढ़ने के कौशल का विस्तार सभी विषयों की पाठ्यचर्या तक है, इसलिए अन्य विषयों में भी कक्षा/कक्ष प्रक्रियाओं में ऐसी पठन कार्यशालाएं शामिल की जानी चाहिए। शुरुआत में इस तरह की कार्यशालाएं संचालित शुरुआत में इस तरह की कार्यशालाएं संचालित में कुछ ज्यादा वक्त लग सकता है परन्तु बाद में विषय की पाठ्यचर्या को तेजी से आगे बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
- भाषा सीखने और उसमें भी पढ़ना सीखने के लिए बहुत जरुरी है कि उनकी आयु, कक्षा और रूचियों के अनुकूल पठन सामग्री प्रचुरता में उपलब्ध करायी जाए। यह सामग्री, विषयों की पठन सामग्री से इतर भी होनी चाहिए, जिससे बच्चों की बहुलातापूर्ण अभिरूचियों को तुष्ट किया जा सके। 'बच्चों की रूचियों के अनुरूप

पर्याप्त पठन सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। यह सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिसे पढ़ने पर उसकी अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विस्तार हो। इसके साथ–साथ यह सामग्री ऐसी भी होनी चाहिए जो उसे विश्व से जोड़ती हो।'[18]

- पढ़ना सीखने में, इस बात की अहम् भूमिका होती है कि बच्चों को किस तरह से फीडबैक दिया जाता है ? फीडबैक बच्चे के प्रयासों के बारे में दिया जाना चाहिए और यह स्पष्ट और विस्तार में होना चाहिए, कहाँ पर क्या–क्या अच्छा किया ? और कहाँ पर क्या–क्या और बेहतर करने की गुन्जाईस है ? इसके बजाय बच्चों को गुड, शाबास, ब्रिलियंट, होशियार के रूप में दिया गया फीडबैक बच्चों की बहुत मदद नहीं कर पाता है। इसका नुकसान ही अधिक होता है, भविष्य में असफल होने पर 'गुड', 'शाबास', 'ब्रिलियंट', 'होशियार' का तमंगा छिन जाने के भय से बच्चे प्रयासों को जारी रखना छोड़ देते हैं। 'विद्यार्थी की क्षमता की प्रशंसा करने पर वे असफलता के भय से आगे की चुनौती स्वीकारते नहीं हैं। इसके बजाय प्रायः की प्रशंसा करने पर वे भविष्य में कठिन चुनौतियों को स्वीकारते हैं, क्योंकि उनको व्यक्तिगत असफलता का भय नहीं होता है। उनके काम की प्रशंसा को वर्णनात्मक बनाएं जिससे विद्यार्थी इसका उपयोग कर सकें।'[19] इस शोध अध्ययन के क्रम में आयोजित पठन कार्यशालाओं में इस तरह के फीडबैक के बहुत ही सकारात्मक परिणाम दिखलायी दिए।
- प्रस्तुत शोध अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है पढ़ना सीखने के लिए स्कूली स्तर पर क्रमशः 'वर्ण', 'शब्द' और 'वाक्य' सीखने के बजाय सीधे टेक्स्ट का उपयोग 'पढ़ना' सीखने के लिए अधिक कारगर साबित हो सकता है। 8B5 पढने की चुनौती से जूझ रहा था, शब्दों को मिला–मिलकर (जैसे कमाल को क–म–ल) पढ़ रहा था। पठन कार्यशालाओं के बाद उसकी पठन क्षमता में आशातीत सुधार हुआ है, अब शब्दों को मिलाकर पढने के बजाय प्रवाह के साथ पढ़ सकता है, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि पढ़े हुए को समझ सकता है। 'फ्लैश कार्ड, चार्ट या लकड़ी के अक्षरों जैसी प्रचलित सामग्री की तुलना में पढ़ने की शुरुआत किताबों से करना कहीं अच्छा और जरुरी है। हमारा उद्देश्य तो आंखिर यही है न कि बच्चे आगे चलकर किताबें पढ़ सकें। चार्टों और कार्डों जैसी चीजें कभी–कभी काम आ सकती हैं पर वे पढ़ना सीखने की वैसी तेज और स्थायी इच्छा पैदा नहीं कर सकती जैसी किताबें दे सकती हैं।'[20]
- बच्चे को पढ़ने के लिए कहने से पहले उसको 'पढ़ना सिखाना' अधिक जरुरी है। पढ़ना सीखने के क्रम में बच्चा पढ़े हुए को समझना भी सीखता है। यदि एक बार बच्चा पढ़े हुए को समझना सीख लेता है तो वस्तुतः वह पढ़ना सीख लेता है। पढ़ना सीख लेने के बाद बच्चे पाठ्य विषय वस्तु के बारे में अपनी समझ बनाता है, अपने

लिए अर्थ निर्मित करता है। एक बार बच्चा यह करना सीख जाए तो फिर उसे विषय वस्तु को याद करने (रटने) की जरुरत भी नहीं रहेगी, बच्चे के लिए याद करना (रटना) बहुत उबाऊ और बोझिल प्रक्रिया होती है, जो तनाव एवं दुश्चिंता पैदा करती है। 'बच्चे अच्छी खासी विकसित भाषिक व्यवस्था के साथ स्कूल आते हैं। इसलिए इसे ध्यान में रखते हुए स्कूली पाठ्यचर्या में भाषा शिक्षण के उद्देश्य तय किये जाने चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बच्चे को इस प्रकार से साक्षर बनाना है कि बच्चा समझने के साथ पढ़ने व लिखने को क्षमता हासिल कर सके।'[21]

- इस अध्ययन से इस बात के पुष्ट प्रमाण सामने आए कि पढ़ना सिखाने के लिए गतिविधियाँ इस प्रकार से आयोजित की जानी चाहिए कि बच्चों को इसके प्रत्यक्ष फल तुरंत मिलने लगें। हम वयस्कों की तरह, बच्चे में परिणाम के लिए इंतजार करने का धैर्य तुलनात्मक रूप से कम होता है। 'हर बच्चा, चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो, भाषा का इस्तेमाल तुरंत कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है, दुनियां को समझना और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक बढ़िया औजार का काम देती है।'[22] पढ़ना सिखाने के क्रम में बच्चों को आयोजित गतिविधियों के उद्देश्यों की स्पष्टता होनी बहुत जरुरी है, इससे बच्चे इन उद्देश्यों के प्राप्त होने पर, इसको अपने प्रयासों के परिणाम/फल के रूप में देखते हैं। बच्चों को 'पढ़ना सिखाने' के क्रम में, उनको पढ़ना सीखने के नियम/सिद्धांत बताने के बजाय प्रत्यक्ष अनुभव देना बहुत जरुरी होता है, इस अनुभव को बच्चे अपने प्रयासों के परिणाम के रूप में देखते हैं और पढ़ना सीखना जारी रखते हैं। 'भाषा की जड़ें प्रत्यक्ष अनुभव से ही विकसित होनी चाहिए।'[23]
- इस अध्ययन के दौरान बच्चों से बातचीत के दौरान एक महत्वपूर्ण बात सामने आयी कि जब परीक्षा के प्रश्न में पुस्तक से ही प्रश्नों के उत्तर के लिखने होते हैं, परीक्षा में प्रश्न इस तरह के पूछे जाते हैं जिनका उत्तर हम याद करके ही लिख सकते हैं, हमने जो समझा है उसको जांचने के लिए प्रश्न ही नहीं पूछे जाते, इसलिए हमें याद करना (वस्तुतः रटना) पड़ता है। बच्चों का यह फीडबैक हमारी परीक्षा/मूल्यांकन प्रणाली की खामी को इंगित करता है और इसमें सुधार की जरुरत को रेखांकित करता है। वस्तुतः परीक्षा प्रणाली में बदलाव किए बिना कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में बदलाव की उम्मीद करना बेमानी है। जब तक हमारी जब तक हमारी परीक्षा/मूल्यांकन प्रणाली बच्चे की याद करने (रटने) की क्षमता की जांच करने पर जोर देती रहेंगी, हम बच्चों को समझकर पढ़ने के अवसरों से वंचित करते रहेंगे। हम व्यस्क भी अपने अनुभव से जानते हैं कि याद करने से समझना आसान है। 'हमारे देश के कई स्कूलों में पढ़ने के कौशल का प्रयोग विभिन्न भाषायी कौशलों के विकास के लिए नहीं किया

जाता। पढने का रिश्ता सिर्फ पाठ्य पुस्तकों और परीक्षा से जुड़कर रह जाता है। नई जानकारी ढूंढने के लिए पढ़ने, निजी रुचियों के विकास के लिए पढ़ने और आनन्द की खातिर पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। पढ़ना बच्चे के समग्र विकास का हिस्सा नहीं बन पाता। परिणामस्वरूप बच्चे पढ़ना सीखकर भी पाठक नहीं बन पाते।'[24]

## सुझाव

यह अध्ययन बहुत सीमित क्षेत्र में और बहुत सीमित स्तर पर किया गया है परन्तु गहन तरीके से किये गए इस अध्ययन के आलोक में कुछ रचनात्मक सुझाव देने का अकादमिक साहस तो किया ही जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नांकित सुझाव दिए जा सकते हैं–

- छोटी–छोटी पठन कार्यशालाएं कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं का हिस्सा बननी चाहिए। शिक्षक की शिक्षण योजना में इस तरह की पठन कार्यशालाओं को शामिल करने की अत्यंत जरुरत है। भाषा की कक्षाओं के लिए इसके अतिरिक्त उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। भाषा की कक्षाओं में महज पढ़ाने के स्थान पर पढ़ना सीखने को वरीयता मिलनी चाहिए। पठन कार्यशालाएं पढ़ना सीखने के लिए अनुकूल वातावरण सृजित कर सकती हैं। दरअसल भाषा के मामले में 'हम बच्चे को बिल्कुल नई चीज नहीं दे सकते। केवल ऐसी परिस्थितियां बना सकते हैं जिनमें बच्चा अपनी मौजूदा क्षमताओं का और विकास कर सके।'[25]
- एक बार जब बच्चा प्राथमिक स्तर को पार करके स्कूल में उच्च कक्षाओं में पहुँच गया है और पठन सम्बन्धी कठिनाईयों से जूझ रहा है तो ऐसे में उसको वर्ण माला से शुरू करके पढ़ना सिखाने की कोई तुक नहीं है, यह कक्षा में बच्चे पर एक अलग तरह का दवाब पैदा करता है और इससे बच्चे को पढने और समझकर पढ़ने में बहुत मदद भी नहीं मिल पाती है। 'वर्णमाला को रटना या कहानी को शब्दशः जोर से दुहराना हमारी परिभाषा के हिसाब से संतोषप्रद गतिविधि नहीं है। ऐसा करते समय बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते। वर्णमाला के अक्षरों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता।'[26] ऐसे में छोटी अवधि की पठन कार्यशालाएं पढ़ना सीखने में बच्चे की बहुत हद तक मदद कर सकती हैं।
- बच्चे द्वारा 'पढ़ना सीखने' और समझकर पढ़ने के लिए शिक्षक का 'फीडबैक' और 'फीडबैक देने का तरीका' एक अहम् भूमिका निभाता है। फीडबैक बच्चे के प्रगति/प्रयासों पर वर्णनात्मक रूप से दिया जाना चाहिए, यह बच्चे को आगे और कोशिश करने के लिए अभिप्रेरित करता है। इसके बजाय बच्चे की शख्सियत के बारे में दिया गया

फीडबैक बच्चे को अपने कम्फर्ट जोन में सीमित कर देता है। भविष्य में असफलता के भी से बच्चे इस कम्फर्ट जोन से बाहर नहीं आना चाहते हैं। रेखांकित करने वाली बात है 'अलग–अलग अवसरों पर बच्चे द्वारा प्रयोग की गयी भाषा पर अध्यापक की प्रतिक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि प्रतिक्रिया दिखाती है कि अध्यापक बच्चे द्वारा एक खास ढंग से प्रयोग की गयी भाषा का उद्देश्य समझ रहा है तो ऐसी प्रतिक्रिया भाषा–प्रयोग के उस ढंग को और समृद्ध बनाती है। इसके विपरीत यदि अध्यापक की प्रतिक्रिया 'सही' और 'गलत' के सम्बन्ध में किन्हीं धारणाओं पर आधारित हो तो वह बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और संवाद क्षमता, भाषा कौशलों के विकास के रस्ते में बाधा खड़ी करती है।'[27]

- बच्चे अपनी गति, पसंद एवं तरीके से पढ़ना चाहते है, इसके साथ ही 'कक्षा के सभी बच्चे एक साथ या एक रफ्तार से पढ़ना शुरू नहीं कर सकते।'[28] बच्चे के पढ़ते समय गलतियों के लिए तुरंत टोकना, बच्चे के पठन उत्साह की बाधित कर सकता है। वस्तुतः 'पढने का मुख्य उद्देश्य समझना है न कि तेजी से बिना गलती किए पढ़ना।'[29] व्याकरणिक और शाब्दिक शुद्धता पर अधिक बल देने से बच्चा पाठ को समझने के बजाय शुद्ध एवं शब्दशः पढ़ने में उलझ जाता है और समझना गौण हो जाता है। यदि बच्चे ने 'मैं गाँव पहुंचा' को 'मैं गाँव गया था' पढ़ लिया तो इसको ठीक करने की जरुरत नहीं है, इससे वाक्य के अर्थ को नुकसान नहीं हुआ है और समझकर पढ़ना ऐसे ही होता है।

- बच्चों की घर की भाषा, उसके परिवेशीय अनुभवों और सन्दर्भों को कक्षा में स्थान एवं सम्मान देने की जरुरत है। 'पढ़ने के स्वस्थ कौशल में मुख्यतः लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़ने में बच्चे की मदद करते हैं। जब तक एक बच्चा पढ़ी हुई सामग्री को समझने या पहले से ज्ञात किसी चीज से जोड़ने में असमर्थ रहता है, तब तक हम उसकी पढने की क्षमता को स्वस्थ नहीं कह सकते हैं।'[30] बच्चे जिस भाषा/बोली में सहज होते हैं, उसी भाषा/बोली अपनी समझ/अनुभवों को बेहतर तरीके अभिव्यक्त कर सकते है। निश्चित रूप से यह उसके घर पर प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा होती है। समझकर पढने की दृष्टि से यह एक उपयोगी तथ्य है। बच्चे की घर की भाषा को स्कूल की भाषा से जोड़ने में शिक्षक को स्कैफ्फोल्डिंग (Scaffolding) करने की जरुरत होती है। उदाहरण के लिए यदि बच्चा अपनी घर की भाषा में कोई बात कहता है तो शिक्षक उसको विद्यालय की भाषा में तर्जुमा करके बता सकते हैं कि आप यह कहना चाहते हैं। इससे बच्चे की घर की भाषा और विद्यालय की भाषा को जोड़ने में एक पुल बनाने में मदद मिल सकती है।

- हमारे स्कूलों के पुस्तकालयों में, पुस्तकें खराब हो जाने, फट जाने के भय से बच्चों

की पहुँच से दूर हैं। बच्चों को अपनी पसंद का निर्धारण करने और पुस्तक चयन के अवसर नहीं हैं। अव्वल तो पुस्तकें कम हैं और यदि हैं भी तो बच्चों की पठन रूचि की विविधता की जरुरत को पूरा नहीं करती हैं। पुस्तकालयों को बच्चों की पठन सामग्री से समृद्ध करने की जरुरत है और दूसरा पुस्तकालय संचालन की जिम्मेदारी बच्चों को देने की जरुरत है। इससे बच्चे पुस्तकालय की पुस्तकों के बारे में अधिक से अधिक जान सकेंगे, अपनी पठन अभिरुचि को पहचान सकेंगे, पठन प्राथमिकताओं को निर्धारित कर सकेंगे। बच्चों के स्वतंत्र और सतत पाठक बनने के लिए, ये उपयोगी निवेश साबित हो सकते हैं। जब भी अवसर मिलें, शिक्षकों को भी बच्चों के साथ इन पुस्तकालय में मौजूद रहना चाहिए, बच्चों से पुस्तकों के बारे में बात करनी चाहिए, बच्चों के लिए 'पढ़ना' चाहिए, सामग्री चयन में मदद करनी चाहिए। ऐसा करने से शिक्षक बच्चों की अभिरुचियों को पहचानने में मदद कर सकेंगे, अपनी शिक्षण योजना के लिए महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त कर सकेंगे। सबसे जरुरी है, शिक्षक पुस्तकालय में पढ़ने के लिए कुछ समय नियमित रूप से दें। बच्चों पर इसका बहुत सकारात्मक असर पड़ता है। दरअसल 'पढ़ना' एक अनुकरणीय मूल्य है, बच्चे इससे पढ़ने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

- इस अध्ययन के अनुभव से यह बात बहुत ही पुख्ता ढंग से कही जा सकती है कि बच्चों से इस बारे में लगातार संवाद/बातचीत करने की जरुरत है कि उन्होंने क्या पढ़ा?, अभी क्या पढ़ रहे हैं? आगे क्या पढ़ने की योजना है? इससे विद्यालय में पठन संस्कृति विकसित करने में मदद मिलती है। 'कक्षा ऐसी जगह है जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ के बीच कई तरह के जटिल स्तरों पर संवाद होता है और इस संवाद में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और निभाने की जरुरत भी है।'[31] बच्चे इस बातचीत/संवाद से अभिप्रेरित होते हैं क्योंकि बच्चों ने जो कुछ भी पढ़ा है उसके बारे में बताने को उत्सुक रहते हैं, और अधिक पढ़ने की कोशिश करते हैं। शिक्षक को इस बातचीत से बहुत सारी उपयोगी सूचनाएं मिलती हैं, इनका उपयोग शिक्षक अपनी आगामी शिक्षण योजना में कर सकते हैं और बच्चों की पठन जरूरतों को भली–भांति संबोधित कर सकते हैं।

अंत में पुनः एक बार कहना चाहता हूँ कि 'पढ़ना दरअसल समझकर पढ़ना है' और 'यह पढ़ना सीखकर ही आएगा'। इसके लिए कक्षा में, पठन कार्यशालाओं में, पुस्तकालय में जहाँ कहीं भी संभव हो हमें बच्चों के पठन के लये अवसर निकालने ही होंगे। (12616 शब्द)

## आभार

इस अध्ययन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए में अपने विद्यालय के शिक्षक साथियों के प्रति आभारी हूँ। इस अध्ययन के क्रम में आयोजित पठन कार्यशालाओं में सम्मिलित बच्चों

के उत्साह एवं तत्परता से मैं अभिभूत हूँ, इसके अभाव में यह परचा लिखना संभव ही नहीं हो पाता। अतः उनको स्नेह प्रेषित करना मेरे लिए अभीष्ट है। इस शोध आलेख को लिखने के लिए निरंतर मार्गदर्शन और अभिप्रेरण के लिए प्रो0 दीपक पालीवाल जी का हृदय से आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इसके अभाव में कदाचित यह अकादमिक कार्य संभव नहीं हो पाता।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. फ्रेरे पाउलो (2010), 'पठन कर्म का महत्व', शैक्षणिक सन्दर्भ, जुलाई–अगस्त 2010, एकलव्य, भोपाल, म0 प्र0.
2. एन. सी. ई. आर. टी. (2009), भारतीय भाषाओँ का शिक्षण–राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, प्रथम संस्करण, 2009, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 25.
3. वही. पृष्ठ 25.
4. Debbie Miller (2006), Reading with Meaning: Teaching Comprehension in the Primary Grades, Stenhouse Publishers, Portland, Maine.
5. Pearson P. David and M.C. Gallagher (1983), The Instruction of Reading Comprehension, Contemporary Educational Psychology 8: 317-344.
6. Debbie Miller (2006), Reading with Meaning: Teaching Comprehension in the Primary Grades, Stenhouse Publishers, Portland, Maine, page 11.
7. Debbie Miller (2006), Reading with Meaning: Teaching Comprehension in the Primary Grades, Stenhouse Publishers, Portland, Maine, page 10.
8. Pressley, G.M. (1976), "Mental Imagery Helps, Eight year olds Remember What They Read", Journal of Educational Psychology, 68:355-359.
9. Hansen, J. (1981), "The Effects of Inference Training and Practice on Young Children", Reading Research Quarterly, 16: 391-417.
10. Brown, Day, Jones (1983), "The Development of Plan for Summarizing Text", Child Development, 54: 968-979.
11. Anderson, R.C. and P.D. Pearson (1984), "A Schema Theoretic View of Basic Process in Reading", In handbook of Reading Research, Ed.P.D. pearson, White Plains, NY, Longman.
12. Raphael, T.E. (1984), "Teaching Learners about Source of Information for Answering Question", Journal of Reading 27: 303-311.
13. Palinscar, A.M., and A.L. Brown (1984), "Reciprocal Teac, "Reciprocal Teaching of Comprehension Fostering and Monitoring Activities", Italic Cognition and Instruction, 1:117-175.
14. कुमार, कृष्ण (1996), बच्चे की भाषा और अध्यापक–एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 2.
15. ब्रिटन, जेम्स (2008), भाषा और अधिगम, अनुवादक–प्रमोद कुमार शर्मा, ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी–7, सरस्वती काम्प्लेक्स, सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 127.

16. कुमार, कृष्ण (1996), बच्चे की भाषा और अध्यापक–एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 17.

17. कुमार, कृष्ण (1996), बच्चे की भाषा और अध्यापक–एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 2.

18. ब्रिटन, जेम्स (2008), भाषा और अधिगम, अनुवादक–प्रमोद कुमार शर्मा, ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी–7, सरस्वती काम्प्लेक्स, सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 160.

19. मुकुंदा, कमला वी.,(2014), स्कूल में आज तुमने क्या पूछा?, एकलव्य, भोपाल, म0प्र0, पृष्ठ 219.

20. एन. सी. ई. आर. टी. (2009), भारतीय भाषाओँ का शिक्षण–राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, प्रथम संस्करण, 2009, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 26.

21. वही, पृष्ठ 26.

22. कुमार, कृष्ण (1996), बच्चे की भाषा और अध्यापक–एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 2.

23. ब्रिटन, जेम्स (2008), भाषा और अधिगम, अनुवादक–प्रमोद कुमार शर्मा, ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी–7, सरस्वती काम्प्लेक्स, सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 134.

24. एन. सी. ई. आर. टी. (2009), भारतीय भाषाओँ का शिक्षण–राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, प्रथम संस्करण, 2009, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 36.

25. कुमार, कृष्ण (1996), बच्चे की भाषा और अध्यापक–एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 17.

26. एन. सी. ई. आर. टी. (2009), भारतीय भाषाओँ का शिक्षण–राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, प्रथम संस्करण, 2009, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 25.

27. कुमार, कृष्ण (1996), बच्चे की भाषा और अध्यापक–एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 9.

28. एन. सी. ई. आर. टी. (2009), भारतीय भाषाओँ का शिक्षण–राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, प्रथम संस्करण, 2009, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 31.

29. मुकुंदा, कमला वी.,(2014), स्कूल में आज तुमने क्या पूछा ?, एकलव्य, भोपाल, म0प्र0, पृष्ठ 200.

30. एन. सी. ई. आर. टी. (2009), भारतीय भाषाओँ का शिक्षण–राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, प्रथम संस्करण, 2009, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 25.

31. वही, पृष्ठ 27.

## संलग्नक-01
## कोडिंग

| कक्षा-6 | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्र0 सं0 | नाम | सामान्य/अनु0जाति/अनु0 ज0जाति/ ओ0बी0सी0 | प्रथम पीढ़ी के अधिगमकर्ता हैं /नहीं हैं | कोडिंग |
| 1 | अनीषा | सामान्य | है | 6GG1 |
| 2 | भावना | सामान्य | नहीं है | 6GG2 |
| 3 | दीपा | सामान्य | नहीं है | 6GG3 |
| 4 | मंजू | सामान्य | नहीं है | 6GG4 |
| 5 | माया | अनु0जाति | है | 6GG5 |
| 6 | पूजा | सामान्य | नहीं है | 6GG6 |
| 7 | रजनी | सामान्य | नहीं है | 6GG7 |
| 8 | शोभा | अनु0जाति | है | 6GG8 |
| 9 | गोकुल | सामान्य | नहीं है | 6GB1 |
| 10 | रितेश | सामान्य | नहीं है | 6GB2 |
| 11 | रोशन | अनु0जाति | है | 6GB3 |
| | | कक्षा-7 | | |
| **1** | **खुशी** | **सामान्य** | **नहीं है** | **7GG1** |
| **2** | **निर्मला** | **सामान्य** | **नहीं है** | **7GG2** |
| **3** | **रोशनी** | **सामान्य** | **है** | **7GG3** |
| **4** | **सान्या** | **सामान्य** | **नहीं है** | **7GG4** |
| **5** | **गोकुल** | **सामान्य** | **है** | **7GB1** |
| **6** | **करन सिंह** | **सामान्य** | **नहीं है** | **7GB2** |
| **7** | **नीरज** | **सामान्य** | **नहीं है** | **7GB3** |
| **8** | **पवन** | **सामान्य** | **नहीं है** | **7GB4** |
| **9** | **करन** | **सामान्य** | **है** | **7GB5** |
| | | कक्षा-8 | | |
| **1** | **आशा** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG1** |
| **2** | **पूजा** | **अनु0जाति** | **है** | **8GG2** |
| **3** | **पार्वती** | **अनु0जाति** | **है** | **8GG3** |
| **4** | **पूजा** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG4** |
| **5** | **सुनीता** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG5** |
| **6** | **भावना** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG6** |
| **7** | **पार्वती** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG7** |
| **8** | **वर्षा** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG8** |
| **9** | **बबीता** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG9** |
| **10** | **पूजा** | **सामान्य** | **नहीं है** | **8GG10** |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11 | भरत | सामान्य | नहीं है | 8B1 |
| 12 | सचिन | सामान्य | है | 8B2 |
| 13 | हरीश | अनु0जाति | है | 8B3 |
| 14 | भानू | सामान्य | नहीं है | 8B4 |
| 15 | संन्तोष | अनु0जाति | है | 8B5 |
| 16 | भूपेंद्र | सामान्य | नहीं है | 8B6 |
| 17 | पवन | सामान्य | नहीं है | 8B7 |
| 18 | गौरव | सामान्य | नहीं है | 8B8 |

## संलग्नक–02

## बच्चों के साथ बातचीत के बिंदु

1. आपको पढ़ना अच्छा लगता है/नहीं लगता है। क्यों ?
2. यदि आपको पढ़ने को कहा जाए तो आप अपनी पसंद की पाठ्यवस्तु पढ़ना चाहेंगे/चाहेंगी या जो कुछ आपसे पढ़ने के लिए कहा जाए वही पढना चाहेंगे/चाहेंगी ? क्यों ?
3. आपको अकेले पढ़ना पसंद है या समूह में पढ़ना। क्यों ?
4. पढ़ने के दौरान यदि कोई बात आपकी समझ में नहीं आ रही हो तो क्या आप किसी दूसरे से मदद लेना पसंद करती हैं/नहीं करती हैं। क्यों ?
5. आप पढ़ने के दौरान या पढ़ना समाप्त करने के बाद ऐसा क्या कुछ करते हैं/करती हैं जिससे पढ़ी हुई चीज आपको अच्छी तरह से समझ में आ जाए ?
6. आप जब कोई पाठ्य वस्तु पढ़ रहे हों तो उस विषयवस्तु को अपने जीवन और आस–पास की किसी घटना से जोड़ते/जोड़ती जाती हैं ? इससे आपको क्या फायदा महसूस होता है ?
7. कोई पाठ्य वस्तु पढ़ने के बाद उसकी मुख्य बातों को लिखने को कहा जाए तो आप इसे किस तरह से लिखेंगे/लिखेंगी ?
8. कोई पाठ्य वस्तु पढ़ने के बाद उसकी विषयवस्तु से मिलती जुलती कोई घटना को सुनाने/लिखने को कहा जाए तो आप ऐसा कर सकते हैं/सकती हैं या नहीं कर सकते हैं/सकती हैं। क्यों ?
9. पढ़ने के बाद आपने जो समझा है उसे किसी को बताना/किसी से साझा करना आपको पसंद है/नहीं है। क्यों ?
10. आपको क्या पढना पसंद है? और यह कहाँ मिल सकता है? आप बता सकते हैं/सकती हैं।

**संलग्नक-03**

**बच्चों के पठन व्यवहार की अवलोकन अनुसूची**

| क्र0 सं0 | अवलोकन बिंदु | छात्र/छात्रा प्रतिक्रिया | छात्र/छात्रा का विशेषीकृत व्यवहार |
|---|---|---|---|
| 1 | कोई पाठ्य वस्तु पढने के लिए देने पर छात्र/छात्रा का व्यवहार एवं भाव-भंगिमा | | |
| 2 | पठन समूह में छात्र/छात्रा का व्यवहार एवं भाव-भंगिमाएं | | |
| 3 | एकल पठन के समय छात्र/छात्रा का व्यवहार एवं भाव-भंगिमाएं | | |
| 4 | अपनी पठन जिज्ञासा और समझ को अन्य साथियों से साझा करने सम्बन्धी व्यवहार | | |
| 5 | पठित विषय वस्तु में से कौन सा भाग अच्छा लगा और क्यों? यह बताना। | | |
| 6 | पठित विषय वस्तु के मूल भाव को अपने शब्दों में बताना। | | |
| 7 | पठित विषय वस्तु के किसी पात्र के रूप में स्वयं रखकर विषय वस्तु की पुनर्व्याख्या करना। | | |
| 8 | पठित विषय वस्तु के बाद की घटनाओं का अनुमान लगाना। | | |
| 9 | पठित विषय वस्तु से मिलती-जुलती अपने जीवन की स्थिति/स्थितियों का विवरण देना/वर्णन करना। | | |

## संलग्नक-04

**Framework Proposed by Debbie Miller**

**Components of the Reading Workshop (03 Day)**

| Phases of Gradual Release | Time to Teach 15–20 Minutes Read-aloud, Mini-lesson Whole Group | Time to Practice 45–50 Minutes Reading, Conferring Small Group, Pairs, Independent | Time to Share 15–20 Minutes Reflection, Sharing Whole Group, Small Group, Pairs |
|---|---|---|---|
| Modeling reading behavior | ✘ | ✘ | ✘ |
| Thinking aloud (showing how) | ✘ | ✘ | ✘ |
| Guided practice (having at it) | | ✘ | ✘ |
| Independent practice (letting go) | | ✘ | ✘ |
| Application on their own (now I get it!) | | ✘ | ✘ |

**Source:** Reading with Meaning: Teaching Comprehension in the Primary Grades by Debbie Miller (2006), Stenhouse Publishers.

## संलग्नक-05

**अध्ययन में सम्मिलित बच्चों का प्रोफाइल**

| क्र0 सं0 | नाम | कक्षा | सामान्य/अनु0जाति/अनु0ज0जाति/ ओ0बी0सी0 | प्रथम पीढ़ी के अधिगमकर्ता हैं /नहीं हैं |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अनीषा | 6 | सामान्य | है |
| 2 | भावना | 6 | सामान्य | नहीं है |
| 3 | दीपा | 6 | सामान्य | नहीं है |
| 4 | मंजू | 6 | सामान्य | नहीं है |
| 5 | माया | 6 | अनु0जाति | है |
| 6 | पूजा | 6 | सामान्य | नहीं है |
| 7 | रजनी | 6 | सामान्य | नहीं है |
| 8 | शोभा | 6 | अनु0जाति | है |
| 9 | गोकुल | 6 | सामान्य | नहीं है |
| 10 | रितेश | 6 | सामान्य | नहीं है |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11 | रोशन | 6 | अनु0जाति | है |
| 12 | ख़ुशी | 7 | सामान्य | नहीं है |
| 13 | निर्मला | 7 | सामान्य | नहीं है |
| 14 | रोशनी | 7 | सामान्य | है |
| 15 | सान्या | 7 | सामान्य | नहीं है |
| 16 | गोकुल | 7 | सामान्य | है |
| 17 | करन सिंह | 7 | सामान्य | नहीं है |
| 18 | नीरज | 7 | सामान्य | नहीं है |
| 19 | पवन | 7 | सामान्य | नहीं है |
| 20 | करन | 7 | सामान्य | है |
| 21 | आशा | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 22 | पूजा | 8 | अनु0जाति | है |
| 23 | पार्वती | 8 | अनु0जाति | है |
| 24 | पूजा | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 25 | सुनीता | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 26 | भावना | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 27 | पार्वती | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 28 | वर्षा | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 29 | बबीता | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 30 | पूजा | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 31 | भरत | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 32 | सचिन | 8 | सामान्य | है |
| 33 | हरीश | 8 | अनु0जाति | है |
| 34 | भानू | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 35 | संन्तोष | 8 | अनु0जाति | है |
| 36 | भूपेंद्र | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 37 | पवन | 8 | सामान्य | नहीं है |
| 38 | गौरव | 8 | सामान्य | नहीं है |

## संलग्नक-06

**Gradual Release of Responsibility Model of Reading Instruction**

| S. N. | Gradual Release of Responsibility Stage | Instructor's Role | Learner's Role |
|---|---|---|---|
| 1 | Focus Lesson (I do it) | Instructor provide direct instruction, models, demonstrate and provide rationale for lesson | Active Listening |
| 2 | Guided Instruction (We do it) | Instructor leads participants through the targeted tasks, continue to model and ask questions | Active Contributing-Learners participate in the task and ask question as needed |
| 3 | Collaborative Learning (You do it together) Informal assessment & Feedback | Instructor interact with student groups or pairs, guides, coaches, clarifies and question students' thinking. Instructor informally asses and re-teaches as necessary | Active Learning-Learners' collaborate with colleagues to implement the targeted tasks (in pair or groups) Learner solve problems, discuss and negotiate to complete the assigned tasks. Optimal when each learner must produce. |
| 4 | Independent Practice (You do it alone) | Formal assessment by the instructor, instructor provide intervention as needed | Independent work-Learner is personally responsible for the assigned task. |

**Source:** Sandra Clark (2014). English Teaching Forum, 2014, Number 2, University of Oregon American English Institute instructor.

## संलग्नक–07

## पारिभाषिक शब्दावली

1. **पठन कार्यशालाएं:** पठन कार्यशालाओं से आशय राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पुड़कुनी (कपकोट) जनपद बागेश्वर में कक्षा 6 से कक्षा 8 तक नामांकित सभी बच्चों की ऐसे कार्यशालाओं से है, जिनमें फैसिलिटेटर द्वारा मॉडलिंग, समूह पठन, समूह प्रस्तुतीकरण, स्वतंत्र पठन एवं स्वतंत्र प्रस्तुतीकरण सम्बंधित पठन गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं।
2. **पठन व्यवहार:** पठन व्यवहार से आशय छात्र/छात्रा द्वारा समूह पठन/स्वतंत्र पठन में ऐसे व्यवहार एवं भाव–भंगिमाओं से है जो छात्र/छात्रा किसी विषयवस्तु/पाठ/कविता कविता आदि को पढ़ते समय प्रदर्शित करते हैं।
3. **स्वतंत्र पाठक:** स्वतंत्र पाठक से आशय छात्र/छात्रा के ऐसे पठन व्यवहार से है,

जिसमें क्या पढ़ना है? कैसे पढ़ना है? कब पढ़ना है? क्यों पढ़ना है? के बारे में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेना शामिल है। इसके साथ ही इसमें अपनी पठन रूचियों और अभिरूचियों को पहचानना भी शामिल है। अपनी उम्र, कक्षा एवं पठन स्तर वाली पुस्तकों, पाठ्यवस्तु को बिना किसी शिक्षक की मदद से आसानी से समझते हुए पढने का आनन्द ले सके।

4. **समझ के साथ पढ़ना:** इसका आशय छात्र/छात्रा के ऐसे पठन व्यवहार से है जिसमें छात्र/छात्रा पाठ्य वस्तु को पढने के दौरान/पढ़ने के बाद अपनी समझ विकसित करता है, अपने लिए अर्थ निर्मित करता है, अपने सन्दर्भों से जोड़ने में सफल रहता है और जरुरत पड़ने पर इसको अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर लेता है। यह किसी पाठ/पाठ्यवस्तु/कविता आदि को हूबहू रट लेने से भिन्न पठन व्यवहार है।
5. **पठन जिम्मेदारी:** यह छात्र/छात्रा के ऐसे पठन व्यवहार से सम्बंधित है जिसमें पाठक छात्र/छात्रा अपनी पठन जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। पढ़ने से पूर्व, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद अपनी समझ को प्रदर्शित करने के लिए के लिए तत्पर रहता है, किसी दिशा–निर्देश के बिना अपना पठन करता है/पठन जारी रखता है।
6. **पठन अभिरूचि:** पठन अभिरूचि से यहाँ आशय छात्र/छात्रा द्वारा स्वतंत्र रूप से यह निर्धारित करना है कि उसे क्या पढ़ना पसंद है ? इस तरह पसंद आने वाली सामग्री कहाँ उपलब्ध हो सकती है ? पढने का आनन्द किस प्रकार से लिया जा सकता है? छात्र/छात्रा अपनी पठन पसंद को अभिव्यक्त कर सकते हैं।